संत गाडगे जी महाराज के उपदेश

- ईश्वर एक एवं कण-कण में व्याप्त है।
- शिक्षा विकास की कुंजी है सबको शिक्षा दो।
- नर ही नारायण है इसकी सेवा करो।
- माता-पिता एवं बड़ों का सम्मान करो।
- भूखे को भोजन दो।
- प्यासे को पानी दो।
- वस्त्रहीन को वस्त्र दो।
- गरीब एवं महिलाओं को शिक्षा दो।
- बेसहारों को सहारा दो।
- अपंगों एवं रोगियों की चिकित्सा कराओ।
- दुःखी एवं निराश्रितों को साहस दो।
- बेरोजगारों को रोजगार दो।

पदाधिकारियों के नाम एवं दूरभाष:

श्री नरसिंह बैठा, संरक्षक-9810842077, डा. जी. डी. दिवाकर, अध्यक्ष - 9868356884 श्री सी. पी. सिंह, चेयरमैन - 9868813787, श्री चिरंजीलाल, उपचेयरमैन - 9868104775, श्री नरेश कुमार कान, उपाध्यक्ष - 9911549080, श्री राकेश कुमार (गुड्डू), उपाध्यक्ष - 9971939416, डॉ. आर. सी. माहुरिया, महासचिव- 9868201943, श्री राजीव कुमार कोषाध्यक्ष - 9350125279, श्री एन. पी. सिंह, संयुक्तसचिव-9891405995, श्री ब्रिजेश कनौजिया संयुक्तसचिव-9818811695, श्री लेखाराम दिवाकर सांस्कृतिक कार्यक्रमसचिव-9210862273, श्री चोखेलाल माथुर, सांस्कृतिक सचिव-9313744956, श्री पंकज कुमार प्रसाद, विधि सलाहकार-9818616688, श्री सुरेश चौधरी, संगठन सचिव-9868523993, श्री बाबूराम चौधरी, संगठन सचिव-9868244421, श्री इन्द्रपाल, सलाहकार - 9013012749 डा. राम गोपाल, प्रचार सचिव-9811502572

संत गाडगे मिशन (पंजी.)
डी-37, भगवती विहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
Email : sgmdelhi@rediffmail.com
Website : www.nirbhay5.tripod.com
सहयोग राशि - रुपये 50/-

impress : 09868861040

बीसवीं सदी के प्रखर

बुद्ध-संत गाडगे महाराज

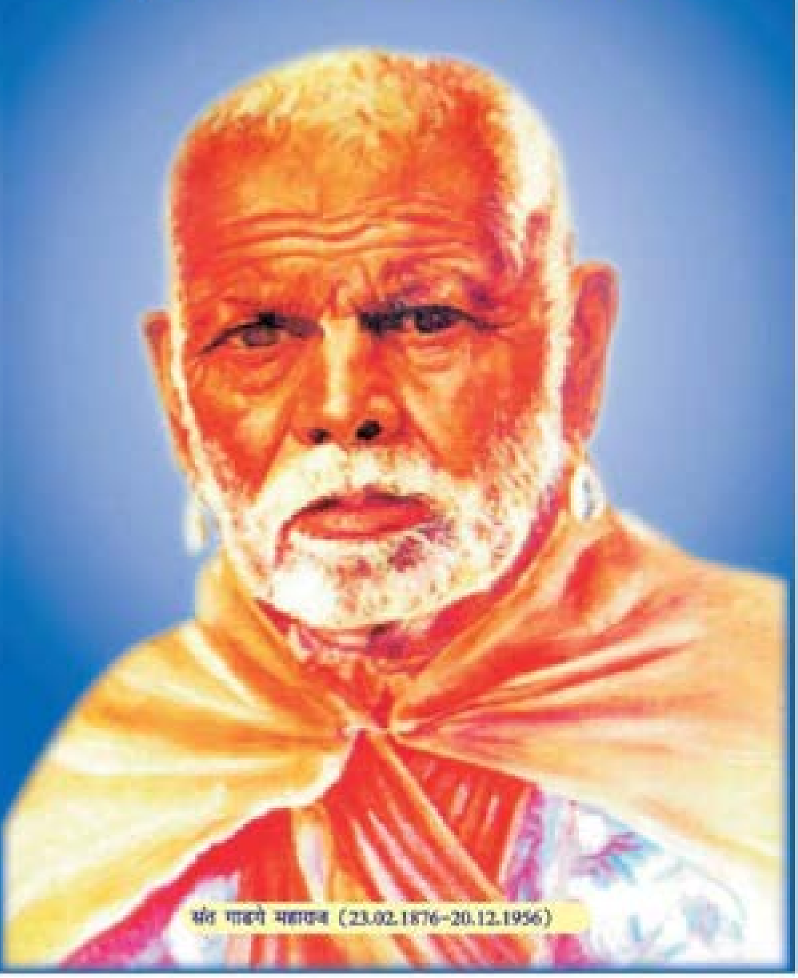

संत गाडगे महाराज (23.02.1876-20.12.1956)

प्राक्कथन

भारतवर्ष की शिल्पकार जातियां, गाडगे बाबा के समय कठोर परिश्रम के बाबजूद अमानवीय अत्याचार सह रही थी। सर्वत्र अन्याय का ही बोलबाला था। ज्योतिबा फूले के बाद गाडगे बाबा ने अमानवीय स्थित को झिंझोड़ा और सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति के लिये मैदान बनाया। बाल्यकाल से संतजी नामदेव, चोखामेला, कबीर, आदि संतो की निर्गुण वाणी व उनके उपदेश धार्मिक समारोहों में देते थे जिससे उनकी माँग सार्व. जनिक समारोहों में होने लगी थी। धार्मिक समारोहों में तथा चारो तरफ दलित समुदाय की समस्याएँ जैसे छुआ–छूत, ऊँच–नीच, अशिक्षा, अंधविश्वास, शराब सेवन, आदि नजर आती थी अत: उपरोक्त समस्याओं को दूर करने के लिये संत गाडगे ने भगवान बुद्ध की तरह 29 वर्ष की अवस्था में अपना घर त्याग दिया था। उन्होंनें स्वच्छता आन्दोलन से समाज सेवा आरंम्भ की। एक बस्ती के पास कूड़े का ढेर था, बदबू निकल रही थी। उसी के पास दलित बच्चे खेल रहे थे। संत जी ने सफाई के फायदे बताये तथा कारसेवा के द्वारा सफाई से बस्ती सुन्दर दिखने लगी। इस तरह गांव–गांव जनसेवा की अलख जगाने लगे, जिससे बीमारियाँ नहीं फैलती थी। गाडगे बाबा शिक्षा का महत्व समझते थे अत: देश की स्वतंत्रताके पहले 31 विद्यालयों, 15 छात्रावासों का निर्माण महाराष्ट्र प्रदेश में जन सहयोग से कराया। दलितों को छुआ–छूत की वजह से धर्मशालाओं, आदि के पास आने नहीं दिया जाता था। अत: समता स्थापित करने के लिये उन्होनें 18 धर्मशालायें, 4 अंधपंगु सदावर्त, 2 गौशाला, 2 नदी घाटों का निर्माण जन सहयोग से कराया। उन्होंने बली प्रथा का उन्नमूलन किया था।

उपरोक्त तथ्यों से लेखक ने साबित किया है कि गाडगे बाबा का आन्दोलन जन उपयोगी एवं बुद्धिवादी था। क्योंकि उनका जीवन भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित दस पारमिताओं एंव अष्टांगिक मार्ग से हमेशा ओत प्रोत रहता था। इसका विस्तार

से उदाहरण सहित लेखक ने वर्णन किया है। आप सभी के अवलोकन के लिये इस पुस्तक में विभिन्न महान व्यक्तियों के श्रद्धा युक्त शब्द सुमन 'गाडगे एवं उनके मिशन के प्रति' का भी सहारा लिया है।

अतः श्री शान्ति स्वरूप बौद्ध, जो सम्यक प्रकाशन के सर्वेसर्वा है तथा सम्यक साहित्य को नित नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने एक किताब गाडगे बाबा और उनका मिशन–सतनाम सिंह के प्रकाशकीय में लिखा है 'जब–जब स्वच्छता अभियान की, अंधविश्वास निर्मूलन की, शिक्षा के प्रसार की, जीव दया की, त्याग की तथा निःस्वार्थ सेवा की बातें चलेंगी तब–तब गाडगे बाबा बहुत आदर व सम्मान के साथ इन पंक्तियों सहित याद आयेंगे।

कुछ लोग थे जो वक्त के सांचो में ढल गये।

कुछ लोग थे जो वक्त के सांचे बदल गये।।

उपरोक्त शब्द सुमन मुझे गाडगे बाबा के लिये सटीक लगते हैं क्योंकि गाडगे बाबा सचमुच में वक्त के सांचों को बदलने वाले महापुरूष थे। वे अपने युग की भयावह रूढ़ियो से लड़े और एक नये युग 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' के सूत्रपात में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

डा. जी. डी. दिवाकर, प्रधान कृषि वैज्ञानिक (कृषि अर्थशास्त्र) रहे हैं अतः उन्होंने संत गाडगे बाबा के आचार विचार, कार्य क्षेत्र का वस्तुपरक तथ्यों के साथ अवलोकन कर भगवान बुद्ध और उनके धर्म के साथ संवद्ध करने का सार्थक प्रयास किया है। मै उनके इस प्रयास की सराहना करता हूँ। यह समाज के लिये एक शुभ संदेश है। संत जी के पद्चिन्हों पर चलने से ही सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक उन्नति होगी।

ललित मोहन शुक्लवैद्य

सदस्य लोकसभा,

करिमगंज, असम, भारतवर्ष

लेखकीय

बोधिसत्व का जीवन : अपने को दूसरों के दुखों को दूर करने में लगाना तथा संतोष पाना।

बुद्धत्व का जीवन : इसको परिभाषित करना मुश्किल है। यह जीवन का अंतिम लक्ष्य है। अत्यंत खुशी, अथाह ज्ञान व करूणा को प्राप्त करना तथा दूसरो के दुख दूर करने के लिये पूर्ण प्रयास करना।

हर क्षण तथा हर महौल में हमें अलग–अलग स्थितियों का बोध होता है। यदि आप पिछले कारणों के बारे में जानना चाहते हों तो वर्तमान में उनके परिणाम को देखो। यदि आप भविष्य में आने वाले नतीजों को जानना चाहते हो, तो वर्तमान के कार्यों का अवलोकन करो कि यह प्रयास सही दिशा में सम्पन्न हो रहा है या नही। हमारे कर्म ही हमारे वर्तमान व भविष्य को शक्ल प्रदान करते है। कर्म हमारे मन, वचन व काया से उत्पन्न होते ही रहते हैं। भगवान बुद्ध ने कभी पूर्व निंधारित भाग्य में विश्वास नही किया। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति अपने कर्म से अपना भविष्य बदल सकता है। आदमी के व्यक्तिगत कार्यो से वातावरण में बदलाव आता है। लोगों की जानवर वाली प्रवृति के कार्यो से जंगल बन जाता है तथा बुद्धत्व वाली प्रवृति से संसार आनन्दमय हो जाता है। हमारी मनोवृति व कर्म हमारे महौल को बदलने में सहायक होते हैं एक बुद्दिमान व्यक्ति अपनी कमजोरियों पर विजय पा लेता है और बुद्धत्व की ओर बढ़ता है। मानव क्रान्ति की दौड़ में मनुष्य अपने हितों से ऊपर उठकर मानव के हितो के लिये काम करता है। कार्य और कारण का अवलोकन कर दु:खों व चुनौतियों से लड़ना ही मानव के लिये बड़ा काम है। दूसरों को दु:खों से मुक्ति करना तथा निर्वाण प्राप्त करना ही जीवन का उद्देय है।

धम्म दर्पण, अं. 129, अ.–दि: 2008

व्यक्तिगत कार्यों के अलावा, मनुष्य के सामाजिक, धार्मिक या परम्परागत कार्यों जैसे जाति प्रथा, ऊँच–नीच, बली प्रथा, देवी देवता, निजीकरण आदि के मानने वालों के कर्मों से वातावरण में जानवर वाली प्रवृतियों से असमानता, बैर–भाव

फैलता है। बुद्धत्व वाली प्रवृति जैसे समता, स्वतंत्रता, करूणा और मैत्रीभाव से संसार आनन्दमय हो जाता है। इसी प्रकार से व्यवस्थागत, सरकारी या सहकारी कार्यो से भी आम आदमी को फायदा या नुकसान होता है। जैसे अच्छे-अच्छे स्कूल, कालेजों से सभी को फायदा होता है यदि उनकी फीस वाजिव है और प्रवेश के अवसर सभी को उपलब्ध है। परन्तु शिक्षा का व्यवसाय व निजीकरण आज की तरह होता गया तो वातावरण में असंतोष फैलना निश्चित है। इसी प्रकार आवागमन के साधन व विभिन्न व्यवसायों के निजीकरण से वातावरण में असंतोष फैलेगा। इसके विपरीत यदि सरकार की हिस्सेदारी या सहकारी है तो सभी को फायदा होगा।

गाडगे बाबा को उपरोक्त व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक तथा व्यवस्थागत प्रक्रिया से उत्पन्न दु:खों व दु:ख के कारणों का सुबोध भगवान बुद्ध की तरह हो गया था। अत: यह दु:ख दूर करने के लिए उन्होंने 29 वर्ष की अवस्था में भगवान बुद्ध की तरह 'समाज सेवा' के लिये ही गृह त्यागा था। जब सिद्धार्थ गौतम को सम्बोधि प्राप्त हो गई तो उन्होंने भी समाज सेवा के लिए निम्न निर्णय लिये थे।

'यह जानकर कि संसार में इतना अधिक दुख है, भगवान बुद्ध ने यह अनुभव किया कि सन्यासी की तरह हाथ पर हाथ रखे बैठे रहना और स्थिति को यथावत रहने देना, उनके लिए ठीक नहीं होगा।

उन्होंने तपश्चर्या को व्यर्थ पाया। संसार से भाग खड़े होना बेकार है, एक तपस्वी के लिए भी संसार से भाग खड़े होना सम्भव नहीं है। उन्होंने अनुभव किया कि संसार से भाग खडे होना आवश्यक नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि संसार को बदलकर इसे और अच्छा बनाया जाए।

बुद्ध ने अनुभव किया कि उन्होंने संसार का त्याग इसलिए किया था कि वहाँ पर इतना अधिक संघर्ष है जिसके परिणाम पीड़ा और दुख है और जिनका उनके पास कोई इलाज नहीं था। यदि वह सद्धम्भ के प्रचार-प्रसार से संसार के कष्ट और दुख को दूर कर सकते है तो यह उनका कर्तव्य है कि वह संसाराभिमुख होकर उनकी सेवा करे और निष्क्रियता की मूर्ति बनकर चुपचाप न बैठे रहे।'

जब ब्रह्मा संहपति को महसूस हुआ कि भगवान बुद्ध ने अपने धम्म का

प्रचार-प्रसार करेंगे तो वह लौटते समय मार्ग में घोषणा करते हुए जा रहे थे कि "बुद्ध उन्हें सुख प्रदान करेंगे जो उदास है, जो दुख से दबे है उन्हें शान्ति प्रदान करेंगे, जो युद्धत्रस्त है उन्हें साहस देगे, जिनका दिल टूट चुका है जो पददलित है और उत्पीड़ित है उन्हें वह विश्वास और आशा प्रदान करेंगे, जो आहत है वे अपने जखमों को भरा समझे, जो भूखे है वे अपने को भोजन प्राप्त हुआ समझे, जो थके है वे अपने को विश्राम प्राप्त समझे, जो तृष्णा से व्याकुल है वे अपनी प्यास बुझी समझे, जो अन्धकार ग्रस्त है वे अपने आपको प्रकाश में समझे, जो परित्यक्त है वे अब खुशी मनाएं।

बुद्ध के सिद्धांत में मैत्री (स्नेह) है जो उन असहाय लोगों को अपना बनाने की इच्छा उत्पन्न करती है जिनका कोई नहीं, उनका उत्थान करने के लिए उत्कृष्ट इच्छा पैदा होती है, जो पतित बना दिए गये और जो उपेक्षित और पददलित है उनके लिए आगे बढ़ने को समता पथ है, इत्यादि"

भगवान बुद्ध और उनका धम्म खंड 2, भाग 1/139-141

उपरोक्त बुद्धत्व जीवन की महान कसौटियों एवं धम्म पर कस कर जब हम गाडगे बाबा के जीवन, दर्शन व उनके बहुजन उपयोगी कार्यों का सिंहावलोकन करते हैं तो गाडगे बाबा भगवान बुद्ध की तरह प्रखर बुद्ध ही प्रतीत होते हैं क्योंकि उनका जीवन भगवान बुद्ध के द्वारा प्रतिपादित 10 पारमिताओं और अष्टांगिंक मार्ग से हमेशा ओत-प्रोत रहता था। उनका कठिन वैराग्य, विनय, लोक संग्रह, सर्वभूत मात्र के लिये भगवद्भाव, कर्तव्य-कठोरता, निःस्वार्थ बुद्धि, दीन दुखियों पर अत्याधिक दया, ममता, परोपकार, अविश्रान्त मेहनत, शारीरिक तपश्चर्या, आदि अनेकों गुणों से सम्पन्न महापुरूष हमने अपने 65 वर्ष के जीवन काल में, भगवान बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फूले तथा बाबा साहब डा. अम्बेडकर के अलावा न तो पढ़ा है और न ही देखा है। हाँ, 100 से अधिक संत, महात्मा, आदि ने अपने-अपने स्तर से दलितो के उत्थान के लिए कठिन प्रयास किए है।

गाडगे बाबा के लाखो अनुयायी थे, जिनमें मजदूर से लेकर मुख्य मंत्री तक थे लेकिन विश्व के 6 महानपुरूषों में एक बाबा साहब डा. बी. आर. अम्बेडकर भी उनके प्रशंसक थे। वे उनसे समय-समय पर मुलाकात करते थे तथा बोधिसत्व जैसा सम्मान देते थे क्योंकि गाडगे बाबा ने अपने जीवन को जन सेवा में 29 वर्ष

की अवस्था से अर्पित किया था तथा अछूतोद्धार में मजबूती के साथ दिन–रात संलग्न रहते थे। संत गाडगे सिर्फ उपदेशक ही नहीं थे उन्होनें अपने सम्यक् विचारों के अनुरूप बहुजन के उत्थान के लिये स्कूलों, छात्रावासों का निर्माण जनसहयोग से महाराष्ट्र प्रदेश में किया था। शिक्षा का व्यवसाय व निजीकरण नही होने दिया। समता स्थापित करने के लिये धर्मशालाओं, अंधपंगु, सदावर्त, मूक पशुओं के लिये गौशाला आदि का निर्माण जनसहयोग से सभी की सुविधा के लिये कराया था। उपरोक्त कार्य दरिद्र नारायण (दलितो) की उन्नति में मील के पत्थर साबित हुए। स्वच्छता अभियान सफलता पूर्वक से चलाया था जिससे प्लेग जैसी भयंकर बीमारियाँ नहीं होती थीं। रात के समय संत जी निर्गुण परम्परा के संतो जैसे नामदेव, चोखामेला, कबीर आदि की वाणी व उपदेश देते थे। बहुजन हिताय-सुखाय के लिये गाडगे बाबा अपने जीवन भर ब्राह्मणवाद की काली करतूतों जैसे जाति-प्रथा, छुआ–छूत, देवी–देवता, सत्यनारायण की कथा आदि के विरोध में सम्यक् ज्ञान का प्रचार–प्रसार भगवान बुद्ध की तरह अपने अंतिम 50 वर्षों में अपना तन घिस–घिसकर करते रहे।

वर्तमान समय में बाबा के विचारो की महती आवश्यकता है। उनके द्वारा अपनाई गई पद्धति 'लोगों द्वारा, लोगों के लिये' की तो विशेष आवश्यकता है। आजकल शिक्षा, स्वास्थ, उद्योग, धंधो आदि का निजी व व्यवसायीकरण हो गया है। अत: बाबा के विचारो व कार्य पद्धति को अपनाने से ही आम जनों को फायदा होगा तथा वातावरण आनन्दमय होगा। क्या कुछ पढ़े लिखे, सक्षम लोग समाज में नहीं है? अवश्य हैं पर अपनी–अपनी ढपली, अपना–अपना राग अलाप रहे हैं जिसकी वजह से समाज में भयंकर असंतोष है।

संत गाडगे मिशन, दिल्ली व लेखक का यह प्रयास है कि गाडगे महाराज के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी लोगों तक पहुँचे। लोग उनके बारे में पढ़ें और समझें कि उनका जीवन कैसा था? किन-किन भयानक स्थितियों से उनको गुजरना पड़ा। उनके जीवन का क्या उद्देश्य था? उनके विचार क्या थे? उनको प्राप्त करने के लिए उन्होंने किन-किन पद्धितियों से क्या-क्या कार्य सम्पन्न किए। क्या उनसे सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक लाभ बहुजन समाज को हुआ था? क्या उनके दिशानिर्देशन में हम आप चल पाए? या यू ही जिन्दगी को हिन्दू धर्म

के रीति रिवाजों से ढो रहे हैं! क्या आजकल उनके द्वारा किए गये कार्यों व उन पद्धतियों की आवश्यकता आज के निजीकरण व बाजारीकरण समय में नहीं है?

यदि उपरोक्त प्रश्न इस पुस्तक को पढ़ने से किसी के मन में आये, तो यह पुस्तक लिखने का प्रयोजन सफल समझेंगे। अतः यह पुस्तक व्यवसाय के लिए नहीं है बल्कि सामाजिक जागृति के लिए लिखी गयी है। इसे खुद भी पढ़े, मनन करें, उनके पद चिन्हों पर चले तथा अपने महापुरूष के बारे में घर के सभी सदस्यों व अन्य को जानकारी दें।

इस पुस्तक के कुछ अंश श्री राम उगांवकर भूदेव द्वारा 'दीन दुखियों के मसीहा श्री संत गाडगे बाबा' एवं श्री सतनाम सिह द्वारा लिखी गई पुस्तक 'गाडगे बाबा और उनका मिशन' से लिये गये है मै उपरोक्त दोनों महान लेखकों का अति आभारी हूँ। मान्यवर शान्ति स्वरूप बौद्ध, सम्यक् प्रकाशन के सर्वेसर्वा, जो सम्यक् प्रकाशन को नित्य नई ऊंचाईयां प्रदान कर रहे है, एक उच्च कोटि के जौहरी है। यह पत्थरों के जौहरी नहीं है। यह मानव मूल्यों के आधार पर परख-परखकर अनेक समाज सुधारकों, महान् विभूतियों को खोज निकाला, जिन्होंने समाज को एक नई दिशा प्रदान की। हिन्दी जगत में गाडगे बाबा पर कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं थी, अतः आपने डा. विमल कीर्ति, अध्यक्ष, पालि भाषा, नागपुर विश्वविद्यालय को संत गाडगे पर लिखने के लिए प्रेरित किया तथा खुद उच्च कोटि के चित्रांकन कर गाडगे बाबा की सचित्र जीवनी प्रदान की। इसी प्रकार श्री सतनाम सिंह को 'गाडगे बाबा और उनका मिशन' नामक पुस्तक लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। अतः हिन्दी जगत में आपके अथक प्रयासों से ही हम गाडगे बाबा को जान सके। इसके लिए आप कोटि-कोटि साधुवाद के पात्र हैं आप महान विभूतियों से सम्बन्धित साहित्य के प्रकाशन एवं उनके मिशन के व्यापक प्रचार-प्रसार और पुनर्प्रतिष्ठित करने को समर्पित है अतः आपने सतनाम सिंह द्वारा लिखी गई पुस्तक के कुछ अंश इस पुस्तक में प्रकाशन की अनुमति प्रदान की है इसके लिए हम आपके विशेष रूप से सदा आभारी रहेगें। आप भारतवर्ष के साहित्य जगत को एक मानवीय दिशा प्रदान कर रहे है इसके लिए आप सदैव याद किये जायेगें।

मैं अपने सहयोगी श्री राकेश कुमार गुडडू, महासचिव, श्री सी. पी. सिंह चेयरमेन, श्री चिरंजीलाल उपचेयरमेन, उपाध्यक्ष डा. आर. सी मथुरिया एवं श्री नेरश

कुमार करन, संयुक्त सचिव श्री एन. पी. सिंह एवं श्री ब्रिजेश कनौजिया, सांस्कृतिक सचिव, श्री गोपाल राजवानी एवं लेखाराम दिवाकर, संगठन सचिव, श्री विजय कुमार एवं श्री बाबू राम चौधरी, कोषाध्यक्ष श्री राजीव कुमार, विधि सलाहकार श्री अशोक कुमार कनोजिया एवं सलाहकार डा. रामगोपाल, श्री पंकज कुमार प्रसाद, इत्यादि कार्यकारणी समिति, संत गाडगे मिशन, दिल्ली के सभी कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों का तहे दिल से आभारी हूँ जिन्होंने यह पुस्तक लिखने के लिए सहमति प्रदान की। माननीय ललित मोहन शुक्लवैद्य, सदस्य लोकसभा, भारतवर्ष का विशेष रूप से कृतघ हूँ जिन्होंने इस पुस्तक का प्राक्कथन लिखकर अनुग्रहीत किया है। श्री एस. के. आर्य, इम्पैस डिजाइनिंग एण्ड प्रिंटिंग, का भी विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक का सुन्दर स्वरूप अपने समाज की कृति समझकर प्रदान किया है।

यह श्री रामपाल सिंह आत्मजा स्व. श्रीरामचन्द्र सिंह, दिलशाद गार्डन, संत गाडगे महाराज के सामाजिक कार्यों, न्याय, समता व भ्रात भाव के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए इस पुस्तक के प्रकाशन का व्यय वहन किया है। अत: मैं आपकी इस दानशीलता का विशेषरूप से आभारी हूँ तथा इसके लिए साधुवाद देता हूँ व आपके उज्जवल भविष्य के लिए शुभ कामनायें करता हूँ।

भवतु सब्बमंगलम्

(जी.डी.दिवाकर)
अध्यक्ष, संत गाडगे मिशन, दिल्ली
पूर्व प्रधान कृषि वैज्ञानिक (कृषि अर्थशास्त्र)
भा. कृ. अ. प. नई दिल्ली

शुभ संन्देश

संत गाडगे महाराज के उच्चकोटि के विचार, कार्य, नि:स्वार्थ सेवाएँ आदि आमजनों को सदा प्रेरित करती रहती है। अत: गाडगे बाबा केवल एक नाम नहीं है यह एक प्रतीक है 'एक महान कर्मयोगी के, आजीवक परम्परा के, श्रमजीवी साधुओं के, नि:स्वार्थ सेवा के, सफाई अभियान के, अंधविश्वास निर्मूल्यन के, जीव दया के, त्याग के, समाज सुधार के और अछूतोद्धार के'। वे परिजीवी साधुओं (महंत, स्वामी, पंड़ा, शंकराचार्यों, पाँच सितारा साधुओं) के प्रतीक नहीं है। गाडगे बाबा ढोंग, अंधविश्वास, छुआछूत, ऊँच-नीच, वर्ण व्यवस्था के खंडन करने के प्रतीक है। अत: वह कबीर, तुकाराम, ज्ञानेश्वर, चोखामेला आदि संतों की कड़ी के ही एक महान सपूत थे। जिन्होंने समाज को आगे बढ़ने की एक नयी दिशा दी। उन्होंने समाज के हित में सोचने और कार्य करने की प्रेरणा दी। अपना गृह 1905 में त्याग कर लोगों को सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लड़ने को प्रोत्साहन प्रदान किया। उनका जीवन देश की विभिन्न समस्याओं के निराकरण, शिक्षा के प्रसार और दलित उद्धार के प्रति समर्पित था उन्होंने 29 वर्ष की अवस्था में भगवान बुद्ध की तरह गृह त्याग कर समाज सेवा का संकल्प लिया था।

संत गाडगे महाराज ने आत्म अवलोकन, चर्चा और परिचर्चा पर बल दिया। उन्होंने शिक्षा को आत्मचिन्तन और समाज के उत्थानोंन्मुख बनाने का एक उदाहरण पेश किया। सामाजिकता और नैतिकता विहीन शिक्षा व जीवन विनाशकारी होता है। जिसका प्रभाव आज कल हम आप स्पष्ट रूप से महसूस कर रहे है। अधिंकाशत: आजकल जो जितना शिक्षित है वह उतना ही पलायनवादी है और भ्रष्ट है। जो जितना जवान है वह उतना मुर्दा है। बुद्धिजीवी होने का पर्याय सुविधा जीवी हो गया है। आज कल शिक्षित लोगों में राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान और राष्ट्रीय प्रगति के प्रश्नों का सामना करने की क्षमता, आत्मविश्वास की कमी उत्तरोत्तर होती नजर आ रही है। आम जनों में आत्मकेन्द्रित आचरण और अवसरवादी मनोवृति का बोलबाला हो गया है। समाज पीछे छूटता जा रहा है। ऐसे वातावरण में संत गाडगे की प्रासंगिकता उत्तरोत्तर तेजी से बढ़ती नजर आ रही है।

संत गाडगे महाराज के जीवन संघर्ष, समाज उपयोगी कार्य आदि के विषय में, आज की पीढ़ी को लगता है कोई सरोकार ही नहीं रह गया है। वे जिस धोबी समाज में जन्में थे। वही समाज उनके बारे में सबसे बड़ा अज्ञानी समाज है। यह बहुत ही दुखद स्थिति है जिसकी वजह से धोबी व दलित समाज धार्मिक पाखंडों में आकंठ डूबा हुआ है और हर प्रकार की जलालत भोग रहा है। जिससे उन्हें बहार निकालने के लिए सन्त गाडगे ने अपने जीवन भर संघर्ष किया था। यह एक भयावह स्थिति है। हमारे बाबा का स्वपन था समाज के दबे-पिछड़े लोग न केवल अशिक्षा, गरीबी, शराबखोरी, अंधविश्वास, देवी देवताओं से मुक्त हो, बल्कि वे परिश्रमशील, गुणवान, शिक्षित, दूरदर्शी और संघर्षशील बनकर, कम क्षमता वाले लोगों के पथ प्रदर्शक और उद्धारक बने। वे देश और समाज के सर्वांगीण विकास के सहभागी भी बने। महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या आज हम-आप उनके दिखायें मार्ग पर चल रहे है? इसका अवलोकन समाज के प्रत्येक इंसान को करना चाहिए। आज देश में इतने अधिक शिक्षित, बड़े-बड़े अधिकारी, व्यापारी आदि होने पर भी क्या गाडगे के कार्यों का 100वां हिस्सा भी कर सके? क्या इसकी जरुरत नहीं है? आज गाडगे बाबा के मिशन में ठहराव आ गया है। इसे गति कैसे दी जाये? समाज में ऐसे लोगों का पूर्ण अभाव क्यों होता जा रहा है। इसका जबाब हम आपको ढूढंना है और उन कारणों का निराकरण करके समाज को प्रगतिशील बनाना है। समाज में संगठनों की कमी नहीं है परन्तु अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग अलाप रहे है। कार्य रूप में कुछ भी नहीं हो पा रहा है अत: गाडगे बाबा के प्रति हमारा सम्मान, श्रद्धा तभी होगी जब हम उनके आचार-विचारों को जन-जन तक पहुँचाये और अमलीजामा पहनायें। वर्तमान समय में कुछ नये प्रकार के कार्य भी करने होगें। आओ हम सब मिलकर इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार करें।

डा. जी. डी. दिवाकर द्वारा लिखी गई यह पुस्तक गाडगे बाबा के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर सरल और रोचक ढंग से प्रकाश डालती नजर आ रही है। आशा है यह शोषित और शोषक वर्गों में एक नई चेतना को जन्म देगी, जिससे समाज में सौहार्द बढ़ेगा। इस उद्देश्य की सफलता के लिए मंगलकामना करता हूँ।

भवदीय

(भगवती प्रसाद सागर)
राष्ट्रीय संरक्षक एवं कार्यक्रम प्रभारी
संत गाडगे समाज सुधार संघर्ष समिति /
पूर्व राज्य मन्त्री (स्वतंत्र प्रभार)
सेवा योजन विभाग, उत्तर प्रदेश

विषय सूची

प्राक्कथन	i
लेखकीय	iii
शुभसन्देश	ix
जीवन परिचय	1
सबसे बड़ी दया	3
इन्सान–इन्सान में भेद क्यों?	3
सफल कीर्तनकार	4
शादी	4
साहूकार से संघर्ष	5
अंधविश्वाश से निजात दिलाई	7
गृह त्याग	7
गृह त्याग के बाद परेशानियाँ	9
स्वच्छता आन्दोलन से सामाज सेवा का आरंभ	9
बहुजन उपयोगी कार्यों से बढ़ने लगा कारवा	10
अछूतों के उद्धारक के रूप में	11
मजदूर की तरह रहे जीवन भर	14
सादगी की मूर्ति	15
शिक्षा में योगदान	16
अंधविश्वास का जोरदार खण्डन	17
डा. बाबा साहब बी. आर. अम्बेडकर एवं गाडगे बाबा	17
बाबा के प्रवचन की शैली	19
गाडगे बाबा और बी.जी. खेर	21
गाडगे बाबा और पं. जवाहर लाल नेहरू	22
गाडगे बाबा और मदन मोहन मालवीय	23
गाडगे बाबा का मिशन अधूरा	23
गाडगे बाबा का अमर संदेश	24
गाडगे बाबा का आन्दोलन–बुद्धवादी	24
भगवान बुद्ध, उनका धम्म एंव गाडगे बाबा	25
महान व्यक्तियों के द्वारा गाडगे बाबा को अर्पित किए गए शब्द सुमन	29
बढ़ते कदम	41

जीवन परिचय

राष्ट्र संत गाडगे महाराज का जन्म 23 फरवरी, 1876, को महाराष्ट्र प्रदेश के अमरावती जिले में स्थित शेणगाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम डेबूजी था। उनके पिताजी का नाम झिंगराजी तथा माता जी का नाम सखूबाई था। अपने समाज में प्रचलित सामाजिक कुप्रथा 'बली' की वजह से उनके पिताजी को शराब पीने की आदत पड़ गई थी। जिसकी वजह से उनका स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी। मरने से पहले उनमें क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ था। उन्हें अपनी दुर्दशा, जिसमें वह मरने जा रहे थे, के मूल कारण का ज्ञान हो चुका था। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। कहावत है 'अब पछताए क्या होत है जब चिड़ियां चुग गई खेत', उन्होंने अपनी पत्नी को कातर निगाहों से घूरा। उसकी गोद में नन्हा डेबू सोया था। कपकपाती हुई आवाज में वह बिलख उठे। देख सखू, पूर्व दिशा के लहूलुहान कफन में सूरज लिपटने ही वाला है। परिन्दे अपने -2 घोसलों की तरफ लौट रहे है। अब रोज-रोज शराब के लिये पैसे मांगना, पीकर आना, गाली बकना, मार-पीट करना.... सब खत्म होने वाला है सखू। इस शराब ने ऐसी हालत बना दी कि मेरी लाश ढकने को ढाई गज का कफन भी नहीं है। शराब ने सब छीन लिया मुझसे, सुख, शान्ति, घर, जमीन, सब कुछ। फिर उसे तरूणावस्था की स्मृति हो आई। पहली बार दारू देवता का प्रसाद समझकर, बली प्रथा में पी थी। दूसरी बार, फिर तीसरी बार..... पीता ही चला गया, बह गया सब कुछ सुख, शान्ति, घर, जमीन। फिर एकाएक वह आक्रोश से भर उठे। मेरा अन्तिम काम कर दे सखू। उठा साले देवता को, फेक गन्दे नाले में। ताकि हमारा डेबू इसकी पूजा के नाम पर शराब न ला पाये, उसे प्रसाद समझकर न पीए और उसका आदी हमारी तरह से न बनने पाये। सखू हमारे डेबू को इन देवताओं और शराब से हमेशा दूर रखना। इसके उपरान्त झिंगराजी का देहान्त 1884 ई. में हो गया। सखूबाई ने झिंगराजी की उपरोक्त बातों का पूर्ण ध्यान रखा, जिससे डेबू जी शाकाहारी बने तथा शराब का

अमल कभी नहीं किया। अनपढ़ होते हुए भी सखूबाई ने कठिन परिश्रम से अपने भाई के घर में सम्मान जनक जगह बनाई थी। वह हमेशा डेबूजी से कहती थी कि 'काम प्यारा होता है चाम नहीं' इसके प्रतिफल से डेबूजी भी परिश्रमशील व्यक्ति हुए। इसका अभाव आजकल के बच्चों में साफ नजर आता है अतः घर में कलह का मुख्य कारण बनते है।

डेबू जी के नाना का नाम हंबीरराव था। दापुरे गाँव में उनकी 65 एकड़ जमीन थीं तथा बड़ा घर था। गाँव में प्रतिष्ठा थी। नाना जी को झिंगराजी की मृत्यु का पता चला तो अपने पुत्र चन्द्रभान को भेजकर सखूबाई व डेबूजी को अपने घर बुला लिया।

नानाजी और मामा सखूबाई व डेबू को बहुत प्यार करते थे। लेकिन कौतिका मामी का व्यवहार सखूबाई और डेबू के प्रति अच्छा नही था। कौतिका की तनी हुई भौहों ने सखूबाई को साफ–साफ बता दिया था कि उसको यहाँ पर कमा कर ही खाना होगा। उनको अंत में बचा खुचा खाना देती थी। सखूबाई ने डेबू के बारे में सोचकर अपने काम करने के ढ़ग में बदलाव किया। अब उसने घर के सभी कार्य जैसे अनाज पीसना, पशुओं को चारा खिलाना, सफाई करना, खाना बनाना, आदि स्वयं प्रातः उठकर करने लगी। कौतिका को यही चाहिए था। सखूबाई प्रातः चार बजे उठकर अनाज पीसती तथा अनाज पीसते समय वह गाना गाया करती थी। डेबू जी भी माता के साथ भजन गाया करते तथा उसे कंठस्थ कर लिया करते थे जिससे उसके सफल कीर्तनकार बनने में बड़ी मदद मिली। डेबूजी भी माँ के कार्यो में मदद करते थे जिससे उसका शरीर हष्ट–पुष्ट एवं मजबूत हो गया था। बच्चो के साथ कुश्ती, कबड्डी, आदि खेल खेलते थे। श्रम के प्रति उनके मन में प्रेम था। वे जानते थे कि श्रम से कतराने का अर्थ है गुलामी। डेबू अब बड़ा और समझदार हो गया था। प्रातः पशुओं को चराने ले जाता और शाम को ले आता। उन्हें चारा खिलाना, साफ सफाई करना, आदि कार्यों से उसकी दिनचर्या बन गई थी जिससे चन्द्रभान की गाय, भैसे नमूनेदार गिनी जाने लगी थी।

सबसे बड़ी दया :

एक दिन सुबह डेबू जी जानवरों को लेकर जा रहे थे। उसने देखा कि मन्दिर के बाहर कुछ अन्धे, अपाहिज भिक्षा माँग रहे है, डेबूजी को उन पर दया आयी। दोपहर को खाने के लिए उसे माँ ने जो रोटियाँ दी थी, उसने वही गर्म-गर्म रोटियाँ उन अपाहिजो को दे दी।

तीरथ जाव, काशी जाव, चाहे जावो गया।
कबीर कहे कमाल को सबसे बड़ी दया।।

दया की यह भावना बचपन से ही हमारे बाबा के दिल में थी।

इन्सान-इन्सान में भेद क्यों?

उस दिन दोपहर को डेबू जी भूखे रहे। उनकी आँखो के सामने वे अंधे अपाहिज दिखाई देने लगे, जो बड़ी करुणा से भीख माँग रहे थे। अत: उन्होंने अंधे अपाहिजों के लिये भंडारा करने का निश्चय किया। उनके साथियों ने इस पुण्यकार्य में सहयोग किया। सभी अपने-अपने घर से थोड़ा-थोड़ा आटा-दाल, आदि लेकर आये। पड़ोस के दो चार गाँवो के भी अन्धे-अपाहिज बुलाये गये। नन्हे बच्चों ने जंगल में ही खाना पकाया। बड़ी श्रद्धा से इन भूखों को खाना खिलाया। सभी ने एक साथ खाना खाया। डेबू को बहुत संतोष हुआ।

लेकिन इस पुण्यकार्य का प्रोत्साहन मिलने के बदले माँ की थप्पड़ खायी, मामा की डाट खानी पड़ी। बड़ी खुशी से डेबू घर गया। देखा तो कुछ गाँव वाले उसके खिलाफ शिकायत करने आये थे। कारण तथाकथित अछूत जाति के बच्चो के साथ उनके बच्चों को खाना खिलाया गया था। यह छूत-अछूत का झगड़ा सुनकर डेबूजी को बड़ा आश्यचर्य हुआ। उसने लोगो की गालियाँ सुनी। लेकिन सबसे एक ही सवाल पूछा। नीच जाति वाले भी हमारी तरह क्या इन्सान नही हैं? फिर ऐसा भेदभाव क्यों?

डेबूजी के उपरोक्त सवाल का जबाव कोई भी नही दे सका। वह सोचने लगे, हम सब एक ही तरह के इन्सान है फिर यह ऊँच-नीच का यह मानवकृत भेद क्यो है?

सफल कीर्तनकार :

डेबूजी सरल स्वभाव के थे अतः अन्य चरवाहो से उनकी मित्रता हो गई थी तथा एक भजन मंडली बना ली थी। पशु मैदान में चरने के लिए छोड़ देते थे। फिर सभी मिलकर भजन, कीर्तन गाया करते थे। डेबूजी नित्य माताजी के द्वारा गाये भजन कंठस्थ कर, नये–नये भजन, मंडली में बड़े तनमन से गाया करते थे। निरंतर अभ्यास से डेबूजी का स्वर अच्छा हो गया था। अतः भजन मंडली के नेता वन गये थे। प्रतिदिन शाम को भजन गाने के लिये एक ग्राम से दूसरे ग्राम जाने लगे थे। यही भजन व कीर्तन का लगाव आगे चल कर उनके ज्ञान में वृद्धि और जनता से सम्पर्क का अच्छा माध्यम बना। डेबूजी की बुद्धि का विकास भी इसी बीच हुआ था। बचपना जाता रहा तथा गम्भीरता आगई थी। डेबू जी दूर–दूर जब भजन मंडली के साथ धार्मिक, सामाजिक समारोहों में जाते तो उन्हे नए–नए अनुभव होते। चारो तरफ दलित समुदाय के बीच समस्याएं ही समस्याएं नजर आती।

शादी:

डेबू जी मेहनती बहुत थे। अब वे सारा समय मामा के खेतों पर काम करने में लगाते। उनकी मेहनत रंग लाने लगी। मामा के खेतो में फसले लहलहाती, घर में अनाज, सब्जियों, कपास आदि के अंबार लगने लगे थे जिससे चन्द्रभान अपने पुत्र से बढ़कर डेबू जी को चाहते थे। उसने एक दिन अपनी बहन सखूबाई से कहा, सखू बहन, अब हमें डेबू की शादी कर देनी चाहिए। इतना सुनते ही सखूबाई के अरमानों को जैसे पंख लग गए। उसके हृदय की खुशी आँखों में छलक आई। फिर शुरु हुआ डेबू जी के लिए लड़की देखने का सिलसिला। डेबू जी दोहरे बदन का गोरा चिट्टा बांका जवान था उसके लिये अच्छी लड़की चाहिए थी। लड़की वाले रिस्ते से प्रसन्न होते थे लेकिन उसकी आर्थिक स्थिति देखते भड़क जाते थे।

कुछ समय में कमालपुर नामक गाँव के धनाजी खिल्लारकर ने अपनी बेटी कुन्ता का रिस्ता डेबू जी से पक्का कर लिया। चन्द्रभान ने दापुरे में सन् 1892 में उनकी शादी धूमधाम से की। डेबू जी सुखपूर्वक अपनी पत्नी के साथ रहने लगे। दिनभर खेत में काम करते थे। रात को भजन मंडली में भजन गाने जाते थे। सबके

साथ प्यार से पेश आते व सबकी मदद करते थे। अतः उनसे लोग बड़ी इज्जत से पेश आने लगे।

साहूकार से संघर्ष :

डेबू जी के नाना बृद्ध हो गये थे। घर का काम–काज मामा चन्द्रभान देखते थे। चन्द्रभान से बनाजी तिड़िके नाम के साहूकार ने मित्रता कर ली थी। बड़ी मीठी–मीठी बातें करता था तथा उन्हें बड़प्पन देता था। इससे चन्द्रभान हवा में उड़ने लगे। उन्होंने साहूकार पर विश्वास किया। चन्द्रभान ने कुछ रुपये शादी आदि के लिये लिए थे और लोगो को अपनी जमानत पर दिलवाये थे। साहूकार ने अन्य लोगो की तरह चन्द्रभान की भी जमीन हड़पने का यह जाल बिछाया था। वह बहुत अधिक ब्याज पर रुपया उधार देता तथा जमीन, गहने, आदि गिरवी रखता था। वापिस किये धन की रसीद किसी को भी नहीं देता था। अतः ऋण लेने वाले कभी भी उसके चंगुल से मुक्त नहीं हो पाते थे। एक दिन हँसते–हँसते साहूकार ने चन्द्रभान को मूलधन एवं चक्रवृद्धि ब्याज का 1700 रुपये बताये। कर्ज न लौटाने पर उनकी 65 एकड़ जमीन गिरवी रखने के बाद ही घर जाने दिया।

उस समय अशिक्षित किसानो को साहूकार कैसे लूटते थे इसका यह एक उदाहरण है। कर्ज चुकाने के लिये चन्द्रभान ने घर के गहने, अनाज, दुधारु पशु, आदि बेचे। जब घर चलाना मुश्किल हुआ तो उन्होनें गाय के बछड़े बेचने चाहे तो डेबू जी ने विरोध किया तथा कहा कि इनके बिना खेती भविष्य में कैसे होगी। तब हंबीरराव ने डेबू से कहा, दो बैल बूढ़े हो गये है। काम तो करते नही है उन्हें फोकट में खिलाना पड़ता है। उन्हे बेचा गया तो कुछ रुपये मिलेंगे। उसने कहा नाना जी कई साल से इन बैलो ने हमारी खेती में मेहनत की है, सोने जैसी फसल दी है और आज वो बूढ़े हो गये है तो उनको कसाई के हाथो बेचोगे? नाना जी आदमी भी बूढ़े होते है फिर उनका क्या करे? डेबूजी के इस सवाल से वह शर्मिंदा हो गये। डेबू ने उन्हे विश्वास दिलाया। 'नानाजी हम सब मेहनत करेंगे, भूखे रहेंगे, नया कपड़ा नही खरीदेगें, साहूकार से गिरवी रखी जमीन छुड़ाएगे। साहूकार ने आपको ठगा है लेकिन हम उसे सबक सिखायेगे।' कर्ज के सदमे में चन्द्रभान

की मृत्यु हो गई। सभी जिम्मेदारी अब डेबू जी के सिर पर आ गई। डेबू जी ने हिम्मत से काम लिया। सभी खर्च कम कर दिये। कड़ी मेहनत कर अच्छा अनाज उगाया, जरुरत भर अनाज रखकर बाकी अनाज के बोरे साहूकार के घर पहुचाने लगा। कुछ सालो के बाद साहूकार के सामने डटकर खड़ा हो गया। साहूकार सभी पावती की 'रसीदे दे दो' और हिसाब कर लो।

रसीद! काहे की रसीद माँगता है तू? तेरे मामा ने इतना कर्ज लिया है जो जमीन की कीमत से अधिक है। अब पूरी जमीन मेरी हो गई। साहूकार ने घमंड से कहा।

'अच्छा, तो तुम जमीन पर कब्जा करोगे? जमीन पर पाँव रखकर तो देख; डेबू ने भी कड़क आवाज में धमकाया। 'अबे जा; निकल यहाँ से; साहूकार ने ऊँची आवाज मे बोला। लेकिन अन्दर से डर गया, क्योंकि, रसीद माँगने वाला, और डटकर सामने खड़ा होने वाला डेबू पहला व्यक्ति था। दूसरे दिन सुबह डेबू अपने हल–बैल लेकर मामा के खेतो में निडर होकर हल चलाने लगा। घोड़े पर बैठकर साहूकार आया। उसके साथ कुछ जाट–पठान भी लाठी–डंडे लेकर आये। साहूकार के इसारा करते ही सब डेबूजी पर टूट पड़े। डेबूजी ने भी लठिया हाथ में लेकर ऐसा कमाल दिखाया कि सब भाग खड़े हुए। साहूकार तो आँखे फाड़कर देखता रह गया। डेबू जी ने उसके घोड़े की पीठ पर ऐसी लाठी मारी तो साहूकार जान बचाने के लिये घोड़ा लेकर भाग गया।

यह लड़ाई देखने पूरा गाँव जमा हुआ था। डेबूजी की बहादुरी देखकर सब गाँव वाले चकाचौंध हो गये। साहूकार का घमंड चकनाचूर हो गया। वह डेबू जी से भयंकर रुप से भय खाने लगा था अत: समझौता करने का प्रयास शुरु कर दिया था। डेबूजी ने साहूकार से कह दिया था कि अब आपका हम पर कुछ भी लेना बाकी नही रहा है। साहूकार की लूट खसोट का डेबूजी ने करारा जबाब दिया था इस तरह का जबाब उस इलाके में इससे पहले किसी ने नही दिया था। इसलिए उस इलाके में डेबूजी का बड़ा नाम हो गया था।

अंधविश्वाश से निजाद दिलाई :

डेबूजी की पत्नी कुन्ताबाई ने बच्ची को जन्म दिया। रीति-रिवाज के अनुसार डेबूजी को बकरे की बली देकर उसके मांस और मदिरा का भोजन समाज के सभी लोगों को कराना था। पर सखूबाई व डेबू जी पुरानी रूढ़ियों, प्रथाओं के विरूद्ध थे। परम्परा के विरूद्ध शाकाहारी भोजन कराने का निश्चय किया। शाका. हारी भोजन देखकर समाज के भाई बंधुओं ने पूछा, यह कैसी दावत है? हमें यह अधर्म पसंद नहीं है और उठ खड़े हुये। डेबू जी ने कहा भाईयो शांति से सुनो, कोई भी धर्म नहीं सिखाता कि बकरा काट कर उसे खाओ और शराब पियो। इस प्रथा के कारण हमारा पिता असमय मर गया। घरबार, खेतीबाड़ी सब बिक गया। ऐसी बरबादी करने वाली शराब, मैं अपने घर में कभी नहीं लाऊँगा। तुम लोग इसे धर्म समझते हो लेकिन मेरे विचार से इससे बड़ा अधर्म कोई नहीं है। भाई बन्धुओं ने कहा कि बलि न देने से बाल-बच्चे मर जायेंगे। तो डेबू जी ने पूछा, भाई यह तुम्हें किसने बताया। क्या दूसरे समाज के लोग बली चढ़ाते हैं तथा शराब पीते हैं? वास्तव में इससे बड़ा अज्ञान इस दुनिया में कोई नही है भाईयों, मेरे घर में नन्ही सी जान आई है यह खुशी का समय है। ऐसे समय बकरी के बच्चे की जान लेना महा पाप है। शराब और मटन के कारण अधिकतर भाई-बंधुओं की आर्थिक स्थिति जर-जर हो गई है। शाकाहारी भोजन का आनन्द लो, तो महान खुशी होगी। इन शब्दों का अच्छा असर हुआ, सभी ने खुशी-खुशी खाना खाया। इस प्रकार डेबू जी सदियों पुरानी रूढ़ियों से समाज को निजात देने में सफल हुये।

गृहत्याग :

बचपन में उन्होंने एक भजन मंडली बना ली थी। यह मंडली आपसी मनोरंजन के लिए बनी थी लेकिन जैसे-जैसे डेबू जी और उनके साथियो की उम्र बढ़ती गयी इस भजन मंडली का सामाजिक-धार्मिक रुप भी निखरता चला गया। उन दिनों दलित समाज पर निर्गुण परम्परा के सन्तों जैसे नामदेव, चोखामेला, आदि का बड़ा प्रभाव था। डेबूजी उनकी वाणी गाते थे तथा उपदेश देते थे। जिससे जगह-जगह सार्वजनिक आयोजनों में, डेबू जी की मांग होने लगी। डेबू जी दूर-दूर जब धार्मिक-सामाजिक समारोहों में जाते तो उन्हे नए-नए अनुभव होते। चारो

तरफ दलित समुदाय के बीच समस्याएं ही समस्याएं नजर आती। बेगार, छुआछूत, भुखमरी, कुपोषण, महामारी, गन्दगी, अशिक्षा, सूदखोरी, आदि की समस्याएँ। डेबू जी ने सोचा कि यह समाज पीढ़ी दर पीढ़ी इन्हीं समस्याओं में फँसा रहता है और फँसा रहेगा। इस समाज की तरफ किसी संत, महापुरुष का ध्यान नही जाता है। हमें स्वयं ही अपने समाज के लिये कुछ करना होगा। यह दर्द हमारा है तो इसका इलाज भी हमें ही करना होगा।

अतः डेबूजी ने इस समाज के लिए सब कुछ अर्पण करने की ठानी। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि बच्चे तो जानवर भी पैदा करते हैं। पेट के लिए मेहनत तो गधा भी करता है। यदि जीवन भर मैं भी यही सब करता रहा तो फिर आदमी में और जानवर में क्या फर्क रहेगा। आखिर किसी को तो घर गृहस्थी छोड़कर आगे आना ही होगा। इतना बड़ा त्याग कौन करेगा। क्या मैं इस त्याग के काबिल हूं? ऐसी कल्पना आते ही उनके सामने अपनी माँ सखूबाई, पत्नी कुंताबाई तथा दो बेटियों अलोका और कलावती के चेहरे नजर आने लगे। पत्नी तो गर्भवती भी थी। वे सोचने लगे मेरे घर छोड़ने पर इनका क्या होगा? फिर मन में आया कि ये सभी दिन भर मेहनत के बदले पेट भर रोटी और तन ढ़कने के लिए कपड़ा ही तो पाती हैं। मेरे रहते भी ये कहां खाली बैठतीं है अतः उसी हाल में उन्होंने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। इस प्रकार फरवरी 1905 को डेबूजी ने एक दिन सदा के लिए अपना घर त्याग दिया। डेबूजी का यह गृहत्याग जन सेवा के लिए था। मेहनत से भागकर, समस्याओं से डरकर तो असंख्य लोग घर छोड़ते हैं लेकिन उनका गृहत्याग समाज सेवा के लिए था; समस्याओं को दूर करने के लिए था जिससे सभी उन्नति कर सकें। तथाकथित ईश्वर की प्राप्ति के लिए उन्होंने घर नहीं छोड़ा। भगवान बुद्धने भी 2500 साल पहले इसी प्रयोजन के लिए घर त्याग किया था कि 'संसार में दुख है, दुख का कारण है, निवारण का क्या उपाय है।' कैसा सुखद संयोग है कि भगवान बुद्ध ने भी 29 वर्ष की उम्र में घर छोड़ा था और उनके 2500 साल बाद गाडगे बाबा जी ने जब घर छोड़ा तब उनकी आयु भी 29 वर्ष की ही थी। बाबा के हाथ में घर से निकलते वक्त एक लाठी थी तथा एक मिट्टी का बर्तन। बाबा ने अपने तन के कपड़े भी उतार फेंके और इधर-उधर पड़े फटे-पुराने चिथड़ों को गांठ-गांठ कर एक चीवर बनाया और उसे पहन लिया।

आपको याद होगा, भगवान बुद्ध ने भी पहले चीवर के लिए भिक्खुओं को ऐसी ही व्यवस्था दी थी। चीवर को पाली भाषा में पांसुकूलित– फटे पुराने चिथड़ों का वस्त्र भी कहा जाता है।

गृह त्याग के बाद परेशानियां :

घर त्याग के बाद बाबा को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा। बाबा जब किसी बस्ती के पास से गुजरते तो गांव के आवारा कुत्ते उन पर टूट पड़ते। बाबा उनसे बचने कि कोशिश करते। वे कभी–कभी उन्हें लहू–लुहान कर देते। मौसम की मार से बचने के लिए बाबा ने फटे पुराने चिथड़े अपने पूरे जिस्म पर लपेटे रहते। कुत्तों के बेतहाशा भौंकने का शोर सुनकर गांव के बच्चे भी जुट जाते। वे शोर मचाते–पागल आया, पागल आया। बाबा के भेष से लोगों को शंका होती। वे चोर, लुटेरा होने के भय से उन्हें भगा देते।

यही नहीं मौसम की मार से भी उनको जूझना पड़ता। वे गांव के निकट आकर वहां की समस्याओं को निपटाना चाहते थे लेकिन मजबूर होकर उन्हें गांवों से बाहर जंगलों में भटकना पड़ता। शुरू–शुरू में उन्हें यह समस्या रही। धीरे–धीरे स्थिति सामान्य हुई। काफी दिनों तक देखते रहने से लोग उनके आदी हो गए तथा निश्चिंत भी हो गए।

स्वच्छता आन्दोलन से समाज सेवा का आरम्भ :

गाँव समाज के लिए डेबू जी का नाम नया नहीं था। उन्हें एक भजन गायक, एक उपदेशक के रूप में लोग जानते ही थे। नया था तो उनका लिबास। वे चलते–चलते एक दलित बस्ती के पास रुक गए। बस्ती के पास ही कूड़े का ढेर था। उससे बदबू उठ रही थी। मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। सूअर लोट लगा रहे थे। उसी गन्दे ढेर के पास दलित बच्चे भी खेल रहे थे। डेबू जी ने बस्ती वालो को सम्बोधित किया। भाईयों और बहनो! अपनी रिहायश की बगल में इस गन्दगी को देखो। यह गन्दगी कई किस्म की बीमारियों का कारण बनती है। इसी गन्दगी की वजह से सवर्ण लोग हमें नीच भी कहते हैं। हमारे लोग ताश खेलते रहते हैं। शराब पीकर पड़े रहते हैं। खाली समय में हमें अपने आस–पास स्वच्छता अभियान

चलाना चाहिए। सभी बस्ती वालों को सफाई के फायदे बताते हुए उन्होंने झाड़ू, टोकरियां, फावड़े मंगवा लिए और हो गई कारसेवा शुरू। शाम होते–होते सारा कूड़ा साफ हो गया। डेबू जी भी बिना रूके परिश्रम करते रहे। सफाई के बाद पूरी बस्ती खिली–खिली सी दिखने लगी थी। गन्दगी, बदबू तथा मच्छर–मक्खियों का कहीं नामोनिशान न था। डेबू जी वहीं एक पेड़ के नीचे लेट गए। बस्ती वाले उनके लिए खाना ले आए। अगली सुबह जब बस्ती वाले फिर आए तो उन्होंने उसी स्थान पर उनसे वृक्षा रोपण करवाया। फूल उगाने की क्यारियाँ बनवाईं। डेबूजी ने उन्हें शाम को अपने कीर्तन में शराब, हुक्का, बीड़ी न पीने, कर्ज न उठाने, अन्ध विश्वास को न मानने, जीव हिंसा न करने और कड़ी मेहनत से अपना भविष्य संवारने की बातें बताईं।

इस तरह वे गांव–गांव, बस्ती–बस्ती जन सेवा का अलख जगाते हुए घूमने लगे। चहूं ओर उनकी चर्चाएं होने लगीं। लोग उनके सेवाभाव के कायल होने लगे, उनकी शिक्षाओं पर चलने लगे। देखते ही देखते डेबूजी गाडगे बाबा के नाम से विख्यात हो गए तथा जन सेवा का प्रतीक बन गए। समय क्रम के अनुसार गाडगे बाबा स्वच्छता आन्दोलन के जन्मदाता हैं। गांधी जी बाबा से प्रभावित भी थे तथा उनसे भेंट करनें के लिए उत्सुक भी थे क्योंकि उनके महानकार्यों से परिचित थे। वी. जी. खैर ने गांधी जी से बाबा की मुलाकात 31 नवम्बर 1935 को वर्धा में करवाई, दोनों के बीच अनेक विषयों पर बातचीत हुई थी।

बहुजन उपयोगी कार्यों से बढ़ने लगा कारवां :

गाडगे बाबा के अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी। लोग उनके इशारे पर जन सेवा में जुटने लगे। उस समय अधिकांश सफर पैदल, घोड़ों पर या बैल गाड़ियों पर तय करना होता था। लोगों को रात पड़ जाती तो पेड़ों के नीचे ही सोना पड़ता। पंढरपुर, आलंदी, नासिक आदि तीर्थ स्थलो में गाँव के दलित यात्री जाते थे। अछूत होने की वजह से उन्हें किसी धर्मशाला के पास फटकने नहीं दिया जाता था। होटल का खर्चा वो उठा नही सकते थे। ठंडी हो या बारिस, रात को रास्ते के किनारे रहना पड़ता था अतः गाडगे बाबा ने इस समस्या के समाधान के लिए धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। पानी पीने के लिए कुँए तथा वर्षा के

पानी के संरक्षण के लिए तालाब खुदवायें। काम सामूहिक कारसेवा के माध्यम से हो जाता और पैसा आना दो आना इकट्ठा करके जुट जाता। बाबा को किसी चीज की जरूरत थी नहीं। वे तन पर तो चिथड़े ही लपेटते थे। पेट उसी बस्ती में भर ही जाता था जिसमें जन सेवा करते थे। वे हर पल जन सेवा को तत्पर रहते। धीरे–धीरे उनके मिशन का काफिला रफ्तार पकड़ने लगा।

बाबा थे तो अनपढ़ लेकिन शिक्षा के महत्व को बखूबी जानते थे। सारी समस्याओं की जड़ ही अशिक्षा है, अज्ञान है, वे ऐसा मानते थे अतः दलितों की शिक्षा के लिए उन्होंने न केवल विद्यालयों का निर्माण करवाया बल्कि दूर के विद्यार्थियों के लिए छात्रावास भी बनवाए। धीरे–धीरे बाबा के अनुयायियों में दलितों के अतिरिक्त पिछड़ों तथा ऊँची जाति के लोग भी शामिल होने लगे। बुद्धिजीवी ब्रह्मण और साहूकार भी सहयोग करने लगे। एक वर्ष तक जन सेवा करने के उपरान्त ही प्रभावित होकर नाना साहब जमींदार ने बाबा के लिए डेढ़ एकड़ जमीन दान दी थी। उस समय सारा दारोमदार खेती–बाड़ी पर ही निर्भर था। खेती को आवारा पशुओं से बड़ी हानि होती थी। फसल के नुकसान से गुस्साए किसान आवारा पशुओं को निर्दयता से पीटते। बाबा ने इस समस्या के समाधान हेतु जगह–जगह गौशालाएं बनवाईं।

बाबा का अगला कदम था मरीजों के लिए अस्पतालों का निर्माण। कुष्ठरोगियों के लिए कुष्ठ आश्रमों का निर्माण। जिन तथाकथित धार्मिक स्थलों पर बकरे, मुर्गे, भैंसे कटते थे। वहां उन्होंने जीव दया नामक संस्थाओं की स्थापना की। आजकल के तथाकथित साधु-सन्तों तथा धर्माचार्यों की तरह पूड़ी हलवा खाने के लिए, शान-शौकत से रहने के लिए, राम मन्दिर बनवाने और गौ रक्षा की राजनीति कभी नहीं की।

अछूतों के उद्धारक के रूप में :

गाडगे बाबा के हृदय में अछूतों के प्रति अथाह प्रेम था। उनकी असहनीय पीड़ा को वे भारी मन से व्यक्त भी करते थे। वे स्वयं भी अछूत समाज में जन्में, पले थे। छुआछूत का दंश उन्होंने भी अपनी छाती पर झेला था। दलितों के रोजमर्रा के जीवन में आने वाली समस्याओं व अपमान का उन्हें पग–पग पर सामना करना

पड़ा था। 1923 में जब बाबा साहेब अम्बेडकर भी दलितोत्थान में नहीं कूदे थे, गाडगे बाबा उस समय पंढरपुर में गोपालपुरा रोड़ पर चोखामेला धर्मशाला अछूतों के लिए समर्पित कर रहे थे। छूत–अछूत के भेद से लड़ने के लिए गाडगे बाबा के मिशन को न केवल मान्यता ही मिली बल्कि सम्मान भी प्राप्त हुए। इस कार्य के लिए निजी और सरकारी स्तर से अनुदान भी प्राप्त होता रहा। यह धर्मशाला 11 लाख रुपये में बनकर तैयार हुई थी। 1923 में 11 लाख का क्या महत्व था यह आसानी से समझा जा सकता है। अन्धविश्वास के वशीभूत होकर जब दलित चन्द्रभागा के तट पर पंढरपुर में तीर्थयात्रा के लिए आते तो किसी भी धर्मशाला में उन्हें अछूत होने की वजह से आश्रय न मिलता। वे वर्षा, गर्मी, सर्दी में जानवरों की तरह खुले में ही पड़े रहते थे। अतः उनकी समस्या को देखते हुए बाबा का यह एक एतिहासिक प्रयास था। इस धर्मशाला का नाम बाबा ने अछूत सन्त चोखमेला के नाम पर रखा था। ताकि अछूत समुदाय इसे अपनी ही सम्पत्ति समझे। यह कार्य समता स्थापित करने का परिचायक था। ऐसी भव्य धर्मशाला सवर्ण जातियों को भी नसीब में उस समय नहीं थी। 1935 में जब यह ट्रस्टी के अधीन हुई तब गांधी के आन्दोलन के वशीभूत बाबा के अनुयायियों द्वारा इसका नाम 'गाडगे महाराज हरिजन धर्मशाला' कर दिया गया। बीच में इसे गांधीजी को समर्पित कर देने की बात भी उठी थी। लेकिन बाद में बाबा ने यह भारत के पहले कानूनमंत्री डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के हवाले कर दी। 1942 से लेकर अब तक वहाँ पर दलित छात्रों के लिए छात्रावास चल रहा है। बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर कभी भी बाबाओं, सन्यासियों के चक्कर में नहीं पड़ते थे। लेकिन वे गाडगे बाबा को बहुत सम्मान देते थे। केवल इसलिए कि वे अछूतोद्धार में उन से पहले (1905) से संलग्न थे। उस समय डा. बाबा साहब अम्बेडकर कक्षा 8 में अध्ययन कर रहे थे। आधुनिक भारत के सच्चे जनसेवक थे। इसके अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी उन्होंने अछूतों के लिए धर्मशालाएं बनवाई। अछूत समाज को नशा न करने, कर्ज न लेने, अन्धविश्वास त्यागने, स्वच्छ रहने आदि बातें तो बाबा जी अपने जीवन की शुरूआत में ही बताने लगे थे। उनके लिए उन्होंने जगह–जगह कुंए भी खुदवाए तथा प्याऊ भी लगवाए। अछूतों के लिए विद्यालय खोलकर अछूतों को बराबर का सम्मान दिलवाया। उन्होंने यह एक नए युग का सूत्रपात कर दिया।

बाबा की तरूणावस्था में ही अछूतों के प्रति उनका स्नेह एक प्रेरक प्रसंग में देखा जा सकता है। उनके गांव में नामसप्ताह (भण्डारा) होता था। पेट भरने की लालसा में उसमें अछूत समाज के लोग भी जाते थे। उस समय प्रचलन था कि सबके भोजन कर चुकने के बाद बचा खुचा भोजन अछूतों के आगे फेंक दिया जाता था। आपत्ति काले मर्यादा नास्ति की स्थिति अछूत समाज यह सब सहता चला आ रहा था।

बाबा ने अछूतों को उस भण्डारे में सम्मान सहित बिठाकर खिलाने की परम्परा डलवाई थी। उन्होंने उच्च जातियों को समझाया, 'ये लोग तुम्हें पालते हैं फिर भी तुम इनके साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हो। तुम्हारा प्रत्येक कार्य तो इन्हीं के द्वारा सम्पन्न होता है। ऐसे में ये सम्मान सहित बैठकर खाने के पात्र क्यों नहीं?' उनके प्रयासों से ही उनके गांव में उछूतों को कुत्तों की तरह खाना फेंक कर खिलाने की घिनौनी परम्परा खत्म हुई थी। अछूत छात्राओं तथा छात्रों के लिए विद्यालय तथा दूर से आने वालों के लिए छात्रावास स्थापित करना युगान्तरकारी कदम था। गाडगे बाबा भले ही अनपढ़ थे लेकिन दूरदृष्टा थे। वे दलित शब्द का अर्थ उतना ही व्यापक मानकर तब चलतें थे जितना हम आज मानते हैं। उनकी दृष्टि में अछूत, आदिवासी, विमोचित जाति, भटक्या जमाती (खानाबदोश कबीले), महिलाएं (शिक्षा, सम्पत्ति, धार्मिक–सामाजिक रीतियों से वंचित नारी समाज) को भी दलित कहा जा सकता है। यही वजह है कि गाडगे बाबा मिशन की तरफ से उपरोक्त सभी वर्गों के उत्थान का कार्य हुआ।

अछूतों के प्रति असीम प्रेम का एक संस्मरण डॉ. विमलकीर्ति जी ने गाडगे बाबा सचित्र जीवनी में दिया है–

'.......धोबी जाति महार, चमार, भंगी की तरह अछूत नहीं थी। हिंदू समाज व्यवस्था में अछूतों को चाहे वह किसी भी प्रदेश और गांव का रहने वाला हो, किस तरह से अपमान को बर्दाश्त करना पड़ता है, इस बात को बाबा ने अपने घुमक्कड़ी जीवन में काफी नजदीक से देखा था। अछूतपन के कई प्रहार स्वयं सहे थे। अपने घुमंतू जीवन में वे जहां भी जाते, जहां भी रुकते, लोग उनकी जाति के बारे में पूछते थे। वे कभी अपने आपको महार बताते थे। कभी मातंग बताते

तो कभी धेड़। कभी चमार तो कभी भंगी बताते थे। फिर तो मार पड़ती थी, उसको सहन भी करते थे। सामान्य तौर पर प्रतिकार करना बाबा का स्वभाव नहीं था बल्कि उनके पास जवाब था–नमस्कार। ब्राह्मण लोग तो जातिभेद, अछूतपन मानते ही थे लेकिन मराठा, कुणबी और अन्य सवर्ण हिंदू जातियां भी अछूतपन ज्यादा मानती थीं। यही वजह है कि यह छुआ-छूत की बीमारी आज हिन्दू धर्म में एक कोढ़ के रूप में जीवित है। अछूत जातियों का मनुष्य के रूप में जीना कठिन था। बाबा ने स्वयं अपने जीवन में कभी अछूतपन को नहीं माना। उनकी संस्थाओं में सामूहिक भोज होता था। पंगत में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होता था। वे अपने कीर्तनों में अछूतपन की जबर्दस्त आलोचना करते थे। उनके अनुयायी बड़े–बड़े सप्ताह का आयोजन करते थे। वहां रोज कीर्तन का आयोजन होता था। सप्ताह के अंतिम दिन बाबा आते थे। रात में उनका कीर्तन होता था। हजारों लोग उनका कीर्तन सुनने आते थे। दूसरे दिन लंगर लगता था। सुबह बाबा सारा मैदान झाड़कर साफ कर देते थे। एक जगह एक विशाल भोज–सप्ताह का आयोजन किया गया था। वहां हजारों लोग इकट्ठा थे। सभी के लिए लंगर था। लोग भोजन के लिए पंगत में बैठे थे। बाबा स्वयं व्यवस्था देखते हुए पंगत में घूम रहे थे। कुछ लोग पंगत में चिल्लाए, "क्या हुआ?" बाबा ने पूछा। देखा कि कुछ सवर्ण जाति के लोग दस–बीस अछूतों को धकेलते हुए ला रहे हैं। बाबा ने पूछा, "क्या हो गया ?" "ये महार हमारे साथ भोजन करने बैठे हैं।'' बाबा ने कहा, "उनको भी भूख लगी है।" उन सवर्णों ने कहा, "हमारे साथ नहीं, हम सभी लोगों के भोजन के बाद।" उन महारों की ओर देखते हुए बाबा ने कहा, "क्यों रे, इतनी लज्जा नहीं आप लोगों को? सभी लोगों के बाद भोजन करने की बजाय पेट में कांटें क्यों नहीं डालते? चलो, हमारे साथियों, हम यहां नहीं रहेंगें, खाना भी नहीं खाएंगे।" उसी समय धूप में बगैर पानी पिए बाबा वहां से चले गए। जिस पंगत के अंत में महारों को जूठन मिलने वाला था, उस लंगर की ओर गाडगे बाबा ने कभी मुड़ कर भी नही देखा। संत गाडगे बाबा ऐसे स्वाभिमानी थे।

मजदूर की तरह रहे जीवन भर :

बड़े–बड़े धन्नासेठ अनुयायियों व लाखों भक्तों के होते हुए आज के

तथाकथित साधू संतो की तरह, गाडगे बाबा ने कभी आराम की जिंदगी व्यतीत नहीं की। पैसा एक हाथ से आता और दूसरे हाथ से जन सेवा के लिए चला जाता। वे स्वयं पैसे का प्रबन्ध करते। स्वयं भी श्रमदान करते। लोग खाना ले आते। वे अपने ठीकरे में डलवाते, खाते और बोरी बिछा कर पेड़ के नीचे लेट जाते। सुबह उठकर फिर श्रमदान करने वालों के साथ जुट जाते। झाडू तो अक्सर उनके हाथ में देखा जाता। जहां भी गन्दगी देखते वहीं सफाई में लग जाते। जब भवन निर्माण का कार्य चल रहा होता, वे ईंट उठाते, कुदाली, फावड़ा और हथौड़ा चलाते। इतना ही नहीं इस सदकार्य में उनका परिवार भी डटा रहता था। वे मजदूरों के बीच हमेशा मजदूर बन कर रहते। किसी भी मजदूर से बढ़कर काम करते। मजदूर थक जाते तो उन्हें छाया में बैठकर आराम ले लेने को कहते। प्यासे होते तो दौड़कर पानी लाते। दानी लोग श्रमदानियों को खाने के लिए गुड़, चना, फल और अन्य सामग्री लाते। बाबा दोनों हाथों से बांटते। उन्होंने अपने अनुयायियों और परिवार जनों को हमेशा एक समान समझा। स्वयं को कभी विशेष दर्जा नहीं दिया और न ही किसी प्रकार का नाजायज फायदा उठाया। यहाँ एक उदाहरण से यह स्पष्ट समझा जा सकता है।

देशमुख एक सदावर्त की व्यवस्था देखते थे उन्होने कुन्ताबाई से कहा आज अन्नछत्र में ही खाना खाओ। कुन्ताबाई ने इन्कार किया। लेकिन देशमुख ने जबरदस्ती थाली पर बैठाया, जहां अंध अपाहिज खाना खा रहे थे। उसी समय बाबा आ धमके। कुन्ताबाई को अन्नछत्र में खाना खाते देख कर आग बबूला हो गये। "तुम यहाँ खाना खाती हो? उठो, ये अन्नदान अंधेअपाहिजो के लिये है हमारे लिये नही" यह एक संदेश आजकल के तथाकथित साधु संतो, मठाधीशों और जन सेवको तथा राजनीतिक सदस्यों के लिये है।

सादगी की मूर्ति :

गाडगे बाबा सादगी की जीती जागती मिसाल थे। वे आज की तरह के योगी, तपस्वी, संन्यासी, यती, धर्मगुरु बनने या दिखने का ढोंग नहीं करते थे। वे उनकी तरह भगवे, गेरुए चोले धारण नहीं करते थे। बल्कि लोगों के फेंके हुए चिथड़ों को गांठ-गांठ कर शरीर पर लपेटे रहते। न वे किसी किस्म की माला

पहनते थे न ही फेरते थे। शरीर पर भस्म नहीं लगाई, माथे पर किसी किस्म का तिलक नहीं लगाया। न ही कभी उन्होंने "जय राम श्रीराम, राम राम" शब्दों वाली चादर ही ओढ़ी। उनके हाथ में टूटे हुए घड़े का ठीकरा रहता था जो भिक्खा पात्र की तरह काम आता। जिस गांव में जन सेवा करते–करवाते उसी गांव के लोगों ने उसमें जो रुखा–सूखा डाल दिया उसे खा लिया। वे कभी भी विशेष चीज खाने की फरमाईश नहीं करते थे।

वे किसी के घर रात को सोने नहीं जाते थे जबकि भक्त लोग उन्हें अपने घर ले चलने के लिए लाईन लगाकर खड़े रहते लेकिन वे किसी पेड़ के नीचे बोरी बिछा कर सो जाते थे।

आजकल साधू, महन्त आदि लोगों से पैर छुआने में गर्व का अनुभव करते हैं। लेकिन बाबा ने कभी किसी से चरण नही छुआए। उनके पांव छूने के लिए लोग लालायित रहते थे। वे मौका ही नहीं देते थे। वे हाथ जोड़ कर अभिवादन करते और दूसरों को ऐसा ही करने की प्रेरणा देते।

शिक्षा में योगदान :

गांडगे बाबा को शिक्षा से बड़ा लगाव था। वे स्वयं तो अनपढ़ थे लेकिन थे ज्ञानी। वे समाज के सभी वर्गों से अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रेरित करते। वे गरीबों से कहते–"अपने बच्चों को हर हालत में पढ़ना–लिखाना। इसके लिए जरूरत पड़े तो घर के टूटे–फूटे बर्तन भी बेच देना। मिट्टी के पात्र में या हाथ में रोटी लेकर खा लेना। चाहे एक समय भूखा रहना पड़े या फिर कपड़ा कम पहनो लेकिन बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ने–लिखाने का काम अवश्य करो।"

गाडगे बाबा प्रवचन ही नही देते थे बल्कि उन्होनें 31 शिक्षण संस्थाएं 15 छात्रावास, एक कन्यापाठशाला, एक उच्च और एक महाविद्यालय, आदि की स्थापना की। आज भी शहरी–ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों में उन्हीं के द्वारा शूरू की गई कई शिक्षण संस्थाएं चल रही हैं। उन्होंने आश्रम पद्धति के कई स्कूल चलाए। यही नहीं कर्मवीर भाऊराव पाटिल की रैयत शिक्षण संस्थाएं, बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर की पीपुल्स एजुकेशन सोसायटी तथा डॉ. पंजाब राव देशमुख की शैक्षणिक संस्थाओं

को दिल खोलकर दान दिया। डॉ. पंजाब राव ने इसलिए कहा–'गाडगे बाबा का आशीर्वाद मिलने के कारण ही मैं इतना शिक्षा का प्रसार कर सका।' आचार्य केंचे ने कहा था– 'वे स्वयं एक विद्यापीठ थे।'

एक बार गाडगे बाबा लोगों को शिक्षा का महत्व समझा रहे थे। अछूत समाज के गरीब लोग थे। वे बोले बाबा क्या करें, बच्चों को पढ़ाना तो चाहते हैं लेकिन पैसा ही नहीं है? बाबा ने उन्हें ललकारा–'कहते हो पैसा नहीं है? पैसा नहीं है तो खाने की थाली बेच डालो, हाथ पर रोटी खाओ। पत्नी के लिए कम कीमत की साड़ी खरीदो। समधी की खातिरदारी मत करो, मगर बच्चों को पाठशाला में डाले बिना मत रहो।' वे कहते भले लोगो–'हुक्का–तम्बाकू, पान–बीड़ी छोड़ो, शराब पीनी बन्द करो, देवताओं पर तरह–तरह का चढ़ावा चढ़ाना बन्द करो; पाई–पाई जोड़ो और बच्चो की शिक्षा पर खर्च करो।'

अन्धविश्वासों का जोरदार खण्डन :

बाबा ने लोगों को उम्र भर अन्धविश्वास से निकालने का भरसक प्रयत्न किया है। जब हैजा भयंकर रूप में फैलता था तब अशिक्षित लोग 'मरी माता' का प्रकोप कहते। पत्थर की मरी माता को पानी चढ़ाते, हल्दी कुंकुम लगाते और कपड़ा तथा चूड़ी पहनाते फिर उस मरी माता को खुश करने के लिए बकरों की बलियां चढ़ाते।

आज भी तथाकथित पढ़े लिखे लोग देवताओं से मन्नत मांगने पर विश्वास करते हैं। किसान लोग अच्छी फसल के लिए मन्नत मांगते। बाबा कटाक्ष करते–यदि अच्छी फसल भगवान को पेड़ा चढ़ाने से हो जाती तो हल–बैल, मेहनत, खाद–पानी की क्या जरूरत। भले लोगो फसलें पेड़े चढ़ाने से नहीं होतीं। बीमारी से ठीक होने की मन्नतें मांगने वालों को बाबा कहते चार आने की मिठाई देवता को चढ़ाने की बजाए चाहे एक बोरी चढ़ा दीजिए। मलेरिया तो कुनेन की गोलियों से ही दूर होगा।

बाबा साहब डा. बी. आर. अम्बेडकर एवं गाडगे बाबा:

उपरोक्त जनसेवा की वजह से, गाडगे बाबा डा. अम्बेडकर को भाते थे।

दोनो में अनुयायिओ जैसा नही बल्कि प्रशंसकों का रिश्ता था। गाडगे बाबा ने अछूतो के लिये 11 लाख रूपयों में बनवाई गई पंढरपुर की चोखामेला धर्मशाला महात्मा गांधी व अन्य को न देकर, बाबा साहब डा. अम्बेडकर को भेंट कर दी थी। जिसमें 1942 से छात्रावास चल रहा है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर, गाडगे बाबा के प्रयासों से बहुत प्रभावित थे। कभी-कभी वे उनके कीर्तन, उपदेश सुनने भी जाते थे।

गाडगे बाबा बीमार थे। डा. अम्बेडकर को यह पता चलने पर उन्हे देखने गये। उस समय डा. अम्बेडकर भारतवर्ष के कानून मंत्री थे। उन्हें शाम को दिल्ली जाना था। कुछ ही समय में उनको स्टेशन पहुंचना था। परंतु गाडगे बाबा को देखने गये। जैसे ही बाबा गाडगे को पता चला कि डा. अम्बेडकर आए है बाबा बिस्तर से उठकर बैठ गए और बोले, 'आप क्यों आए? आपका एक-एक मिनट बड़ा कीमती है। हम फकीर हैं। आपका कितना बड़ा अधिकार?' डा. अम्बेडकर बोले, 'बाबा हमारा अधिकार दो दिन का है, कल कुर्सी से हटे, तो हमें कौन पूछने वाला, आपका अधिकार अमर है।'

डा. बाबा साहब अम्बेडकर के विचार इस बात में पक्के हो गये थे कि यह छुआ-छूत का मामला अनेक सदियों तक हिन्दू धर्म में बने रहने से हल नहीं होगा। अतः धर्म परिवर्तन का निश्चय किया, तो उन्होंने सोचा कि संत गाडगे महाराज इस विषय में सच्चा मार्ग बतलाएगे। जब संत गाडगे से डा. साहब की मुलाकात हुई तो उन्होंने कहा कि हमने धर्मान्तरण का निर्णय लिया है। इसमें मुझे आप सच्चा मार्ग बताये। संत गाडगे ने कहा कि सारा दलित समाज आपके साथ है। उनका आप पर पूर्ण विश्वास है। उन्हें आप सही रास्ते से ले जाइये। धर्मान्तरण करते समय इस बात का ख्याल रखे कि हम जिस संस्कृति तथा वातावरण में पले है, ऐसा ही वातावरण जिस धर्म में है, ऐसे धर्म को आप स्वीकार करे जिससे दलितो की आर्थिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक उन्नति हो सके। इसके बाद डा. बाबा साहब अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। ऐसी अटूट श्रद्धा डा. बाबा साहब अम्बेडकर की थी बाबा गाडगे में।

बाबा के प्रवचन की शैली

बाबा अपना उपदेश, कीर्तन के साथ-साथ देते थे। बाबा की अवाज प्रभावशाली थी। वे प्रश्न-उत्तर शैली में उपदेश करते। साथ-साथ लोगों से हाँ-ना पूछते जाते। फिर आगे बढ़ते। वे कहते-आदमी मन्दिर में रखी भगवान की मूर्ति को बनाता है और वही आदमी बाद में उसी मूर्ति के आगे खड़े होकर बच्चे मांगता है।

क्या यह ठीक है? बाबा पूछते।

नहीं, गलत है - लोग कहते।

भले लोगों आदमी का काम मूर्तियां बनाना है। मूर्तियों का काम आदमी बनाना नहीं-बाबा समझाते।

लोग हंसने लगते।

बाबा टोकते-हंसते भी हो और इनके चक्कर में फंसते भी हो।

वे मूर्ति पूजा और उस पर चढ़ावा की मूर्खता का खण्डन करते।

भगवान बड़ा या हम बड़े-बाबा पूछते।

भगवान बड़ा-लोग कहते।

फिर भगवान को हम दें या भगवान को हमें देना चाहिए-बाबा पूछते।

भगवान को देना चाहिए- लोग जोर से कहते।

भले लोगों ये मन्दिर देवी-देवताओं के घर नहीं है बल्कि पंडे-पुजारियों की कमाई के अडडे हैं-बाबा समझाते।

बाबा बीच-बीच में चुटकी भी लेते।

एक है सत्यनारायण-बाबा कहते।

हां है बाबा।

सवा रुपये में कोई मजदूर मिलता है, अपनी इच्छानुसार मकान बनाने को।

नहीं बाबा

लेकिन यह सत्यनाराण सवा रुपये में ही हर इच्छा पूरी कर देता है।

भले लोगो, यह सत्यनारायण नहीं, असत्यनारायण है।

लोग हंसने लगते।

बाबा फिर टोकते, उसी पर हंसते भी हो और उसी की कथा के नाम पर फंसते भी हो।
देवदासी प्रथा पर बाबा प्रहार करते।
एक देवी है येल्लम्मा
हां बाबा।
अनपढ़ लोग उससे अपनी नवजात बच्चियों की शादी कर देते हैं।
हां बाबा।
ये बच्चियां बड़ी होकर देवदासियां कहलाती हैं। पण्डे-पुजारियों की हवस का साधन बनती है।
लोग गम्भीर हो जाते है।
भले लोगों, येल्लमा देवी है देवता नहीं। अब बताओ उसके साथ लड़की की शादी होनी चाहिए या लड़कों की?
लोग हंसते, बाबा फिर टोकते-अब हंसते हो, देवी के जाल में भी तुम ही फंसते हो।
इस प्रकार वे अपनी प्रश्नोत्तर पर आधारित, मनोरंजन से युक्त व बुद्धि की कसौटी पर खरी उतरने वाली विचारधारा का उम्रभर प्रचार-प्रसार करते रहे।
बाबा छुआछूत की भावना पर भी उम्र भर प्रहार करते रहे। वे लोगों से पूछते-यदि अछूत ने लोटे के पानी को छुआ तो लोटे को अग्नि में जलाकर शुद्ध करते हैं या नहीं?
हां बाबा, करते हैं, लोग कहते।
बाबा फिर पूछते-अछूत के शरीर से सम्पर्क हुआ तो आदमी अशुद्ध होता हैं तो वह शुद्ध कैसे होगा?
फिर खुद ही बताते-उसे भी लोटे की तरह अग्नि में जलाकर शुद्ध करना चाहिए कि नहीं?
वे सवर्णों के कुएं पर पानी पीने के बाद जानबूझ कर कहते-'यह कुआं तो हमारे ही अछूत बुजुगों के हाथ से बना है।' इस पर सवर्ण उनकी पिटाई करने लग जाते। शूद्रों, अतिशूद्रों को यह देख कर क्रोध तो आता लेकिन कर क्या सकते थे। क्योंकि वे उन्हीं सवर्णो पर आश्रित थे। इस

प्रकार वे अछूतों के मनों में क्रांति के बीज बोते थे तथा सवर्णों के गलत अवधारणा को वेपर्दा करते रहते थे।

बाबा अपने अनुयायियों की भीड़ से पूछते-ब्राह्मण कभी बकरे की बलि नहीं देता फिर भी उसके घर में पैसा क्यों? शूद्र सैंकड़ों बकरे बलि में देते है फिर भी वे गरीब क्यों? पढ़े-लिखे लोगों और ब्राह्मणों के घरों में देवता का कोप क्यों नहीं होता? बाबा जानते थे कि यह सब धर्म के ठेकदारों का षडयन्त्र है। लोग इन ढकोसलों को आसानी से नहीं छोड़ने वाले। इसलिए वे उनसे पूछ-पूछकर बुराइयों को छोड़ने को कहते।

वे पूछते-क्या काले जादू से किसी को नष्ट किया जा सकता है?

हां बाबा, लोग कहते।

पक्का विश्वास है तुम्हें-बाबा फिर पूछते

ऐसा देखते-सुनते आए है हम-लोग बोलते

तो फिर सरकार सेना में राइफल-बंदूक-बम का प्रयोग क्यों करती है? ऐसे दस बीस आदिमयों की सेना बनाकर दुश्मन को नष्ट क्यों नहीं कर देती?

8 नवम्बर 1956 को बान्द्रा (बम्बई) में किए गए अपने अन्तिम कीर्तन में बाबा ने कहा-लोग कहते हैं कि सपने में उन्हें भगवान दिखे थे-शंख, चक्र, गदा, सभी साज-सम्मान के साथ। जो वस्तु मन में बैठी रहती है, सपने में वही दिखती है। क्या मेरे बाप को कभी आपने सपने में देखा है?

नहीं देखा।

तो जो देखा नहीं वह दिखता भी नहीं।

बाबा को उपरोक्त कीर्तन में किसी ने बताया कि इस क्षेत्र के आपके प्रमुख अनुयायी ने भगवान की कृपा से बहुत बड़ा मकान बनाया है। बाबा ने टोका-भगवान घर नहीं देता-घर मनुष्य ने बान्धा। घर मनुष्य बनाता है पर ये अनाड़ी भगवान को घर बनाने का श्रेय देते हैं।

गाडगे बाबा और बी. जी. खेर:

एक समय था जब बी.जी. खेर साधु समान लोगो से बहुत नफरत करते थे। पंढरपुर में जब गाडगे बावरा मराठा धर्मशाला का निर्माण करवा रहे थे तब खेर साहब उत्सुकतावश रूके और पूछा कौन-सा कार्य चल रहा है। लोगों ने बताया

तथा गाडगे बाबा से परिचय भी करवाया। खेर साहब ने बड़े अनमने से भाव में बाबा की तरफ देखा और पूछा, 'क्या फटे कपड़े पहन कर कभी भगवान मिलता है।' बाबा ने कहा कि 'फटे कपड़े हमने भगवान से मिलने के लिए नहीं पहने हैं। फिर भी यदि आपको पता है कि भगवान कैसे मिलता है तो कृपया हमें भी बता दीजिए, हम आपके आभारी रहेंगे।' यह सुन कर खेर साहब झेंप से गए और बिना कोई उत्तर दिए वहां से चले गऐ। धर्मशाला बन जाने पर उसको सुचार रूप से चलाने के लिए ट्रष्ट डीड बनबाने के लिए किसी के साथ बाम्बे में श्री खेर के पास गये, ट्रस्ट का प्रारुप पूछने पर उन्होंने खेर साहब को बताया तथा अन्त में कहा **कि इसके अन्त में यह जरूर लिख देना कि इस धर्मशाला में मेरा या हमारे किसी रिश्तेदार का किसी प्रकार का कभी कोई अधिकार नहीं होगा।** यह सुनकर खेर साहब बाबा की तरफ देखकर दंग रह गये। समय बीतता गया। गाडगे बाबा जन सेवा की बुलंदियां छूते रहे और खेर साहब राजनीति की। वहीं खेर जब मुख्यमंत्री बने तब बाबा के महान कार्यों, सादगी व त्याग से प्रभावित होकर उन्होंने अपना गुरु माना तथा बाबा को भ्रमण के लिए असुविधा न हो, इसके लिए एक गाड़ी भी दी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान खेर को जब जेल हुई थी, तब जेल से छूटते ही उन्होंने पूछा था-गाडगे बाबा कहां हैं? जानकारी मिलते ही वे अपने परिवारजनों से भी पहले गाडगे बाबा से मिले। खेर ने बाबा को प्रणाम किया और कहा, बाबा लोग पंढरपुर में भगवान के दर्शन करने जाते हैं लेकिन मेरे भगवान तो आप हैं। उन्होंने बाबा से कहा कि मुझे आज ऐसा आशीर्वाद दें कि में आपकी तरह ही जनसेवा के कार्य करूं। इतिहास गवाह है कि उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य एवं जनसुविधाओं पर अपनी महानतम् सेवाएं दीं। महाराष्ट्र में विकास का एक नाम बी.जी. खेर भी कहा जाता है। उनके पीछे बाबा की शिक्षाओं का असर था।

गाडगे बाबा और पं. जवाहरलाल नेहरुः

बाबा के अनुयायी अक्सर बाबा से अनुरोध किया करते थे कि वे अपने सेवा कार्यो का ब्यौरा पं. नेहरु तक पहंचाएं, लेकिन बाबा उन्हें मना करते। सन् 1941 ई. में जब नासिक में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तब बाबा से मिलने धर्मशाला में शंकरराव देव भी गए। उन्होंने बाबा से कहा-हम सोच रहे हैं कि पं. नेहरुजी

से आपके कार्यों का परिचय करवाया जाए। बाबा ने विनम्रता से कहा-पं. नेहरुजी को सारे देश के बारे में सोचना पड़ता है। उन्हें यहां लाकर उनका बहुमूल्य समय बर्बाद करना मुझे ठीक प्रतीत नहीं होता। लेकिन फिर भी शंकरराव देव जी ने बाबा के सभी सेवा कार्यों की जानकारी पं. नेहरुजी को दी। नेहरुजी ने कहा, 'ऐसे महापुरुष ही हमारे देश का धन हैं।'

गाडगे बाबा और मदनमोहन मानवीय:

गाडगे बाबा जी के एक बार काशी प्रवास के समय बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रेरणास्रोत मदनमोहन मालवीय को जानकारी मिली कि बाबा काशी में हैं। बाबा से मिलने मालवीय जी दौड़े। बाबा को विश्वविद्यालय में आमंत्रित किया। वे बाबा की सादगी, त्याग एवं बहुजन उपयोगी कार्यों से पहले ही प्रभावित थे। मानवीय जी से वे बोले, पंडितजी आप गरीब विद्यार्थियों को शिक्षा देकर महान देश सेवा कर रहे हैं। मैं आपकी इस महान सेवा से प्रभावित हूं। पंडितजी ने विनम्रतापूर्वक कहा, 'यह तो आपका बड़प्पन है बल्कि मेरा कार्य तो आपके अधिक कार्यों के सम्मुख बेहद बौना है।'

काशी के घाट पर रात को बाबा का कीर्तन था। कीर्तन में भी उन्होंने अपने भक्तों से कहा, 'आप काशी विश्वनाथ के साथ-साथ मालवीय जी के 'काशी विश्वविद्यालय नाथ' के भी दर्शन करके जाना। सच्चे विश्वनाथ वहीं है जहां देश के कोने-कोने से आकर हजारों विद्यार्थी पढ़ते हैं।

गाडगे बाबा का मिशन अधूरा है

बड़े दुखी मन से कहना पड़ता है कि गाडगे बाबा के चले जाने के इतने वर्षों बाद भी उनका मिशन अधूरा है। जिस श्रमण परम्परा (दबे कुचले वर्ग) के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया, यह वर्ग अभी भी लगभग उसी स्थिति में है तथा अभी भी उसी अन्धविश्वास के भंवर में, उसी अज्ञान में फंसा हुआ है। शिक्षा अभी भी इस वर्ग को सुलभ नहीं हो पाई है।

गाडगे बाबा ने जो जन कल्याण के इतने महान कार्य किए वे सब जनता के जनसहयोग से ही हो पाए। यही 'पे बैक टू द सोसायटी' का अमर सन्देश मान्यवर कांशीराम की मार्फत हमारे सामने आता है। जिस समाज में हमने जन्म

लिया, जिस समाज से हमने इतना कुछ सीखा उसे कुछ न कुछ लौटाने का भाव, तन, मन और धन से होना चाहिए। यदि गाडगे बाबा के महान कार्यों से प्रेरणा लेते हुए 'दबे कुचले वर्ग' में यह चेतना आ जाए तो देश के चप्पे-चप्पे में उनका मिशन पुनः जीवित हो सकता है। जिससे इस वर्ग के स्कूल छात्रावास आदि स्थापित हो सके है तथा इस वर्ग की अर्थिक, सामाजिक उन्नति हो सकती है।

गाडगे बाबा का अमर संदेश:

"बाप हो भगवान न तो तीर्थ में है और न ही मूर्ति में। वह तो दरिद्रनारायण के रूप में स्वयं तुम्हारे सामने खड़ा है।"

उसकी प्रेम से सेवा करो -

गाडगे बाबा का आन्दोलन बुद्धिवादी था:

गाडगे बाबा पढ़े लिखे नही थे लेकिन फिर भी वो जनता को अपने कीर्तन, प्रवचन के समय उपदेश देते थे कि आप अपने दुखों के कारण जानों, समाधान का मार्ग खोजो। अन्धविश्वासों पर मत चलो, अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करना सीखो। तुम्हारा जीवन स्तर उठाने के लिए न तो आसमान से फरिश्ते आएंगे, न ही करोडों देवी देवता और न ही वे लोग आएंगे जो सदियों से आपका शोषण कर रहे हैं। आपको अपना दीपक स्वयं ही बनना होगा। अतः भगवान बुद्ध के कल्याणकारी मार्ग का अनुगमन करते प्रतीत होते हैं। भगवान बुद्ध ने कहा था–

1. **मा अनूस्सवेन** – किसी बात को इसलिए मत मान लो कि वह सुनने में आई है। यह जरूरी नही कि सुनी गई हर बात सही ही हो।

2. **मा परम्पराय** – किसी बात को इसलिए भी मत मान लो कि वह परंपरा से चली आई है। बहुत से अंधविश्वास एवं अवैज्ञानिक बातें परंपरा से चली आती हैं।

3. **मा इतिकिरियाय** – किसी बात को इसलिए भी मत मान लो कि लोग ऐसा ही कहते रहे हैं। बहुत सी बेसिर–पैर की बातें इसी प्रकार के लोगों की देन हैं।

4. **मा पिटकसम्पदानेन** – किसी बात को इसलिए भी मत मान लो कि वह

धर्मशास्त्रों द्वारा बताई गई है। बहुत सी अप्रमाणिक एवं अवैज्ञानिक बातें इन धर्मग्रंथों की ही देन हैं।

भगवान बुद्ध, उनका धम्म एंव गाडगे बाबा:

संत गाडगे का जीवन, भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित दस पारमिताओं एवं अष्टागिक मार्ग से हमेशा ओत-प्रोत रहता था। पारमिता यानी जीवन में पूर्णत्व की अवस्था अथवा सद्‌गुण का पथ भी कहा जा सकता है। इस मार्ग का पहला अंग **शील** है। उन्होंने पंचशील -प्राणी हिंसा न करना, चोरी न करना, झूठ न बोलना, व्याभिचार (परस्त्रीगमन) न करना, और किसी प्रकार का नशा न करने के वृत ले रखे थे, अत: उनका जीवन सदाचार से युक्त था। **(2) दान**- वह जरुरतमंद व्यक्तियों को बिना किसी अपेक्षा के आवश्यक वस्तुओं का दान देते रहते थे तथा दूसरे व्यक्तियों को भी दान देने के लिये हमेशा भजन, कीर्तन व प्रवचनों द्वारा प्रेरित करते रहते थे। शिक्षा दान को वह सर्वोत्तम मानते थे। इसी उपक्रम में उन्होंने अशिक्षा दूर करने के लिए महाराष्ट्र प्रदेश में 31 शिक्षण संस्थाओं, 15 बालक एवं बालिकाओं के छात्रावास, 18 धर्मशालाओं, 4 अंधपंगु सदावर्त, 2 गौशाला, दो नदी घाटों का निर्माण, जन सहयोग से कराया था। उन्होंने इन महान कार्यों को जन आन्दोलन का रूप दे दिया था। उनके स्वर्गवास (1956) के बाद जनता जनार्दन ने 12 विद्यालय, 12 छात्रावासों, 5 वृद्धाश्रमों का निर्माण कराया। **(3) उपेक्षा**- उपरोक्त संस्थाओं के संचालन के लिये ट्रस्ट डीड बनवा देते थे तथा उसके अंत में यह जरुर लिखवा देते थे कि इस संस्था में मेरा या मेरे किसी वारिस का कभी कोई अधिकार नहीं होगा। **(4) नैष्क्रम्य**- संसारिक काम वासनाओं का त्याग उन्होंने 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग कर किया था। **(5) वीर्य**- वह कुशल कर्मों के संपादन में हमेशा लगे रहते थे जिसकी वजह से उपरोक्त महान संस्थाओं का निर्माण कर सके। वह स्वच्छता पर बहुत ध्यान देते थे, जहाँ कहीं भी गंदगी नजर आती तो वह स्वयं झाड़ू लेकर सफाई करने लगते थे। यह सफाई का कार्यक्रम महाराष्ट्र में एक जन आंदोलन बन गया था। जिससे बीमारियां नहीं फैलती थी। जिस तरह महात्मा गांधी जी का नाम खादी से जुड़ा है उसी प्रकार गाडगे जी का नाम स्वच्छता से जुड़ा है। **(6) शान्ति**- वह हमेशा क्षमाशील रहते थे क्योंकि उन्होने काम, क्रोध, मद्, लोभ पर विजय पा ली थी। यह उनके जीवन में कई

घटनाओं से साबित होता है। **(7) सत्य**- वह हमेशा सत्य बोलने वाले व्यक्ति थे। यह उनके द्वारा हिन्दू धर्म में प्रचलित असत्य पर आधारित सत्यनारायण की कथा, बली प्रथा, आदि की असत्यता अपने प्रवचनों में सिद्ध करते रहते थे। **(8) अधिष्ठान**- वह अपने योग्य उद्देश्य के लिये दृढ निश्चय ही नहीं करते थे बल्कि आम लोगों की भलाई के लिए उपरोक्त संस्थाओं का निर्माण करते रहते थे तथा जनता जनार्दन को भी कुशल कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। जैसे बच्चों की शिक्षा के लिये वह कहते थे कि घर की थाली बेचनी पड़े तो बेच दो, पर बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाओ । **(9) करूणा**- वह मानव ही नही, सभी जीवों के प्रति दया की खान थे। इसीलिये वह कहते थे, भूखे को भोजन दो, पशु-पछियों को अभयदान दो, इत्यादि। **(10) मैत्री**- वह सभी मानव प्राणी के प्रति भाई चारे की सद्भावना रखते थे । उपरोक्त तथ्यों से मालूम होता है कि वह अपने देश के असहाय, गरीब बन्धुओ की भलाई के लिये कुछ न कुछ हमेशा करते ही रहते थे। आज, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के लिये उनके मार्ग पर चलने की महती आवश्यकता है।

गाडगे बाबा जी की **दृष्टि सम्यक्** थी। उनको मालूम था कि संसार में दुःख है, असमानता है यह दुःख मिथ्या- दृष्टि, अति लोभ, मोह, द्वेष, मद् की वजह से है । मनुष्य हिन्दू धर्म के व्यर्थ, कपोल कल्पित कर्म-काण्डों में फसा रहता है जैसे हवन कराना, बली देना, गंगा स्नान, शास्त्रों की पवित्रता, इत्यादि। वह प्राकृतिक नियमों पर व पंचशील को धारण करने में विश्वास करते थे। उनका मन स्वतंत्र था। उनके विचार स्वतंत्र थे, उनके **संकल्प सम्यक्** थे आशायें व आकांक्षायें ऊंचे स्तर की, उनके योग्य थी। वह हमेशा **सम्यक् वाणी** बोलते थे। सत्य बोलते, दूसरे की बुराई नही करते, दूसरे के बारे में झूठी बातें नहीं करते, किसी से गाली गलोज व कठोर वचन नहीं बोलते थे। वह बेमतलब मूर्खतापूर्ण बाते नहीं करते थे बल्कि उनकी वाणी बुद्ध संगत, तर्कपूर्ण व सोद्देश्य पूर्ण होती थी। उनके **कर्मान्त सम्यक्** थे वह दूसरे की भावनाओं और अधिकारों का ख्याल रखते थे। जीवन के मुख्य नियम है उनसे अधिक से अधिक समन्वय रखते थे। उनकी **जीविका सम्यक्** थी भिक्षावृति से किसी को हानि नहीं होती थी। स्कूल, छात्रावास आदि के निर्माण में मजदूरों से ज्यादा मेहनत करके भोजन करते थे।

उनके **व्यायाम सम्यक्** थे अतः अष्टांगिक मार्ग विरोधी चित्त प्रवृत्तियों की उत्पत्ति को रोकते थे, जो उत्पन्न हो गयी उन्हें दबाते थे तथा अष्टांगिक मार्ग की पूर्ति में सहायक चित्त प्रवृत्तियों को उत्पन्न करते और उनकी वृद्धि करते रहते थे। उनकी **स्मृति सम्यक्** थी इसीलिये उनका मन हमेशा जागरूक रहता था। कुशल विचार की वृद्धि की वजह से उपरोक्त महान कार्यों का सम्पादन कर सके थे। उनकी **समाधि सम्यक्** रहती थी। वह हमेशा बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के बारे में सोचते ही नही रहते थे अपितु उन सद्गत विचारो को कार्यरूप में, प्राणी मात्र की भलाई के लिये, कुछ न कुछ हमेशा करते ही रहते थे। अतः बाबा के पथ पर चलने की महती आवश्यकता आज कल के वैश्विक वातावरण में है।

बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के लिये गाडगे बाबा अपने जीवन भर ब्राह्मणवाद की काली करतूतों जैसे समाज में फैले जातिवाद, ऊंच-नीच, देवी-देवता, गंगा स्थान से पाप धुल जाते है, धर्म ग्रन्थों की पवित्रता, आदि मनघणंत के बारे में अपने बहुजन समाज को सावधान करते रहे। वह अपने भजन, कीर्तन के माध्यम से उपरोक्त अत्याचारों की पोल पट्टी खोलते रहें। मनोवैज्ञानिक, सामाजिक व आर्थिक समता के लिये शिक्षा, धर्मशाला, सम्यक् ज्ञान का प्रचार-प्रसार, आदि महान कार्यों को आंदोलन के रूप में करते रहे । परन्तु हमारा अज्ञानी बहुजन समाज हिन्दू धर्म के उपरोक्त भ्रम जालों से पूरी तरह से निकल नही पाया है । उपरोक्त जीवन शैली के अनुकरण से ही संत गाडगे की प्रज्ञा, करूणा एवं मैत्री की भावना जागृति हो गई थी जिससे उपरोक्त महान कार्यों का सम्पादन अपने जीवन में कर सके। अतः हम आपको आज अपने उज्जवल भविष्य के लिए यह निर्णय लेना होगा कि हमें हिन्दू धर्म मार्ग का अनुगमन करना है या शील-सदाचार की महान विभूति गाडगे बाबा की शिक्षाओं का अनुसरण करना है।

यह सुखद सहयोग ही है कि समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने तथा निर्मल जीवन हेतु 29 वर्ष की अवस्था में भगवान बुद्ध की तरह, गाडगे बाबा ने गृह त्यागा था तथा 51 वर्षो तक जनता जनार्दन की भलाई के लिए संघर्ष करते रहे। समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक असमानता कम करने

का पूर्ण प्रयास किया तथा हिन्दू धर्म में प्रचलित अन्ध विश्वास का तथ्यों के साथ खण्डन किया। वे देवी-देवता को मानने वाले नहीं थे। समाज में जागृति के लिए दोनों विभूतियों ने प्रवचन का सहारा लिया तथा कर्म की प्रधानता को महत्व दिया। उन्होंने किसी को गुरू नहीं बनाया तथा उत्तराधिकारी भी नियुक्त नहीं किये। सध र्म, 'निर्मल मन, वचन व काया के आचरण' को ही प्राथमिकता दी। पशु हत्या (बली प्रथा), जाति प्रथा, ऊँच-नीच तथा अन्ध विश्वास का विरोध किया। कर्म की पूजा की तथा स्वर्ग-नरक की मान्यता को नकारा व इसकी कामना उन्होंने कभी नहीं की। भगवान बुद्ध और गाडगे बाबा के विचार, मान्यताएें काफी हद तक एक जैसी थी। दोनों तर्क शक्ति पर कस कर देखते थे जो श्रेष्ठ अपने व बहुजन भलाई के लिए अच्छा लगता उसी को मानते थे। किसी प्रचलित या धर्मग्रन्थों में लिखी मान्यता को वह किसी प्रकार का स्थान नहीं देते थे। उपरोक्त विषय के बारे में उनके द्वारा दिये गये कुछ उदाहरणों से हम आप यह सिद्ध कर सकते है। 2500 वर्ष पहले भगवान बुद्ध जातिवाद के सबसे अधिक विरोधी थे। वे समता के बड़े समर्थक थे इसी प्रकार गाडगे बाबा भी बीसवीं सदी में जातिवाद के विरोधी थे। समता, भ्रातभाव व सभी की उन्नति करने के लिए बाबा ने 31 स्कूल, 15 छात्रावास, आदि का निर्माण एक पद्धति 'लोगों द्वारा लोगो के उपयोग के लिए' के तहत कराया था जिससे शिक्षा का आज की तरह व्यवसायीकरण नही होने दिया था। सभी को सामान्य रूप से शिक्षा शुलभ कराकर समता स्थापित करने की पद्धति स्थापित की थी। जिसका आज पूर्ण रूप से अभाव है जिसकी वजह से आज दलित समुदाय के बच्चे सरकारी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए मजबूर है। जहाँ शिक्षा के नाम पर बच्चों का समय बर्बाद होता है।

भगवान बुद्ध को उच्च कुल तथा राज्य का आश्रय जन्म से मिला हुआ था। इसके विपरीत गाडगे बाबा को तथाकथित निम्न कुल का अभिश्राप जन्म से मिला हुआ था। इन्हें किसी प्रकार का संरक्षण प्राप्त नहीं था। हिन्दू धर्म की सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक दासता गाडगे बाबा को पैतृक रूप से मिली हुई थी। जो मनोबल तोडने वाली थी, फिर भी गाडगे बाबा ने उपरोक्त विषम परिस्थितियों में

अपने हौसले बुलन्द रखे। यह उनकी प्रज्ञा का कमाल था जो यथास्थिति में उचित निर्णय जनता जनार्दन की भलाई के लिए लेते रहे। इस महापुरूष ने करोडो की सम्पत्ति का निर्माण किया, परन्तु मिट्टी का लोटा छोड़ा नहीं, कौडी कान में बंधी हुई छोड़ी नहीं, पासुकूलित (फटे-पुराने वस्त्रों का चीवर) का त्याग नहीं किया, यह था बाबा का सच्चा अनासक्त योग। उनका कठिन बैराग्य, विनय, लोक संग्रह, सर्वभूत मात्र के लिए भगवद्भाव, कर्तव्य-कठोरता, निस्वार्थ बुद्धि, दीन-दुखियों पर अत्याधिक दया, ममता, परोपकार, अविश्रान्त मेहनत, शारीरिक तपश्चर्या, उदारता, साधुता, कुशाग्र-बुद्धि, कार्य-कुशलता आदि अनेकों गुणों का समन्वय देखने पर बाबा प्रखर बुद्ध ही प्रतीत होते हैं। बाबा अष्ट-सिद्धियों और नौ निधियों के गुणों के खान थे। आपके अवलोकन के लिए निम्न महान व्यक्तियों के सद्गत विचार प्रस्तुत है।

महान व्यक्तियों के द्वारा गाडगे बाबा को अर्पित किए गए शब्द सुमन :

देश के अनेक महान व्यक्ति गाड्गे बाबा और उनके महान कार्यों के प्रशंसक थे। वे गाडगे बाबा को किसी बोधिसत्व से कम नहीं आंकते थे। बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर, महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय, भाऊ राव पाटिल, पंजाब राव देशमुख जैसे प्रसिद्ध लोगों की गाडगे बाबा में बड़ी आस्था थी। उनका दर्शन करने आम जन ही नहीं बल्कि बड़े-बड़े नेता, समाज सुधारक, साहित्यकार आदि आते रहते थे। यहीं नहीं प्रसिद्ध सन्त भी उनके आगे नतमस्तक थे। गाडगे बाबा में अजीब सा आकर्षण क्यों था। क्योंकि उन्होंने लोगों के सामने उपदेश नहीं बल्कि अपने जीवन का उदाहरण रखा। यही वजह है कि उनसे मिलने वाला प्रत्येक श्रद्धालु उनकी निष्ठा, ईमानदारी, लगन, स्पष्टवादिता, सादगी, दयालुता, आदि गुणों की वजह से उनका ही होकर रह जाता था। उनके चाहने वालों में पत्रकार, साहित्यकार एवं फिल्म निर्माता डॉ. पी. के. अत्रे, उपन्यासकार गोपाल नीलकण्ठ दांडेकर, प्रबोधान मासिक पत्रिका के सम्पादक के. सी. ठाकरे, राष्ट्र संत और अशुकवि संत तुकड़ों जी थे। उनके कार्यों एवं व्यक्तित्व की भूरी-भूरी प्रशंसा करने

वालों में अनेक उच्चकोटि के विद्वानों और लेखकों में नागपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. वी. भी. कोलते, इतिहासकार एन. आर. पाटक और प्राचार्य मधुकर केचे थे। गाडगे बाबा के इर्द गिर्द कार्यकर्ताओं, कलाकारों, बुद्धिजीवियों का एक समर्पित वर्ग तैयार हो चुका था जो निरन्तर उन्हें सहयोग देता रहा। ऐसे लोगों में शिंदे महाराज, कैकड़ी महाराज, तानपुरे महाराज जैसे भी थे। यहां प्रस्तुत हैं महान व्यक्तियों द्वारा गाडगे बाबा को अर्पित किए गए शब्द सुमन -

मदर टेरेसा : "संत गाडगे बाबा हमेशा समाज के निम्न स्तर के सर्वसाधारण व्यक्तियों पर प्रेम करते रहे एवं यही उनकी हमारे लिए देन है। उनको जन्म देकर भगवान ने मानव जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। जिनको समाज ने दूर फेंक दिया है, जिनके जीवन में कोई सहारा नहीं है, ऐसे हजारों लोगों को ढूंढ-ढूढ कर गाडगे बाबा ने सहारा दिया। गाडगे बाबा की स्मृति तथा उनका कार्य अमर रखना हम सबका कर्तव्य है।"

भाऊराव पाटिल : "महाराष्ट्र के इतिहास में संतों ने बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए है। संत नामदेव ने तो पूरे भारत में बारकरी सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार किया। संत ज्ञानेश्वर और एकनाथ ने काफी संत-साहित्य का निर्माण किया। तुकारामजी ने भगवान धर्म सम्प्रदाय के भक्ति मार्ग पर झंडा फहराया। संत तुकारामजी की परम्परा आज गाडगे महाराज और अन्य संत चला रहे हैं। महाराष्ट्र में प्राचीन संतों ने अपनी अभगवाणी और कीर्तन द्वारा जनता को पंढरपुर का महत्व समझाया। उनमें त्याग की भावना का निर्माण किया। संतों ने स्वयं का जीवन सर्वसंग परित्याग करके केवल लोक सेवा के लिए समर्पित किया।

मैं पंढरपुर में कई बार संतों के मेले में गया। छोटे-बड़े संत - कीर्तन करते समय तन्मय हो जाते हैं। उनकी तन्मयता देखकर मुझे बहुत आनंद आता था। मुझे इस जगह पर एक बात कहनी है, जो कीर्तनकार समाज के साथ तन्मय हो जाता है, उसे समाज-जागृति का कार्य करना चाहिए। "हे विश्वची माझे घर" अर्थात् यह विश्व मेरा घर है-ऐसी उसकी वृति होनी चाहिए। आजकल अपने राष्ट्र

की परिस्थिति की दृष्टि से जनता की शिक्षा का प्रश्न बहुत बड़ा है। इस प्रश्न को संतों द्वारा अपने कीर्तन से प्रचारित करना चाहिए, ऐसा मेरा मत है। किसी भी गांव में मंदिर से भी अधिक स्कूल को महत्व मिलना चाहिए। कारण मंदिर में केवल पत्थर की मूर्ति रहती है, परन्तु स्कूल रूपी मंदिर में विट्ठल की मूर्तिया होती है। देश के सामने सच्चा कार्य स्कूल में आने वाले बालक विट्ठल रूप की शिक्षा है। गाडगे बाबा ने अनेक जगह पर मठों (धर्मशाला) और स्कूलों की स्थापना की, परन्तु मुझे यह कहना है कि आने वाले संतों को मठों के अलावा स्कूल बनवाने का प्रयत्न भी करना चाहिए। मेरे विचार प्राचीन संतों से बिलकुल ही भिन्न हों, ऐसा नहीं है। प्राचीन समय में संतों ने जो लोक सेवा का कार्य किया है, वही कार्य आज के समय के अनुसार हम शिक्षा द्वारा कर रहे हैं। मुझे महाराष्ट्र के संतों से ऐसी ही प्रार्थना करनी है। उन्हें राष्ट्र जागृति के लिए अपने आध्यात्मिक विचार के साथ-साथ शिक्षा प्रसार का कार्य भी करना चाहिए।''

('प्रयत्न' मासिक, वर्ष 1, अंक तीसरा, फरवरी 1956)

यशवंतराव ब.चव्हाण : ''समाज के निचले श्रेणी के लोगों के बारे में सहानुभूति और उनकी सेवा करने की वृति गाडगे बाबा जैसे भारतीय संत की बहुत बड़ी शक्ति है। विचारों के सामर्थ्य पर अपने देश में गरीबी, दरिद्रता आदि होने पर भी हजारों वर्षों से समाज टिका हुआ है, फल-फूल रहा है। इसका कारण है, गाडगे बाबा जैसों के द्वारा बीच-बीच में निर्माण होने वाली अलौकिक संत-मंडली।

ऐसे संतों के विचार के कारण ही यह समाज टिका हुआ है। गाडगे बाबा केवल चमत्कार करने वाले संत नहीं थे। वह समाज निर्माण करने वाले, समाज को शिक्षा देने वाले, समाज से शिक्षा प्राप्त करने वाले संत थे। मैंने उन्हें 10-12 वर्ष की अवस्था से देखा है। लोग उनके पीछे पागल की तरह घूमते थे। उनके भजन सुनते थे। उसके समय में लाउडस्पीकर और आकाश वाणी जैसे साधन नहीं थे। उस समय भी फटे-कपड़े पहने हुए, हाथ में मिट्टी का लोटा लिए हुए, बाबा का आगमन होते ही गांव में पता चल जाता था। हजारों लोग कीर्तन सुनने के लिए इकट्ठे हो जाते थे। उनके प्रिय भजन की धुन जहां शुरू हुई कि दोनों हाथ ऊंचे

करके लोग तालियां बजाकर ताल देते थे।

अमरावती जिले में एक मामूली धोबी के घर में जन्म लेकर उन्होंने पूरे महाराष्ट्र में दीन-दुखियों के लिए बहुत बड़ा कार्य किया। इसकी परम्परा उनके शिष्यों को चलानी चाहिए। महापुरूष के पीछे केवल साम्प्रदायिकता के ढोंग के बढ़ावा देने का मैं विरोध में हूं। **हमारा देश महापुरूषों को भगवान बनाकर छोटा कर देता है। इस देश में सामाजिक क्रांति कभी नहीं हुई। इसका कारण यह है कि क्रांतिकारी विचार वालों को हम मन्दिर में बिठा कर समाप्त कर देते हैं। ऐसा पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिखा हैं। ऐसा गाडगे बाबा के बारे में नहीं होना चाहिए। गाडगे बाबा चमत्कार करने वाले संत नहीं थे। वे समाज के सेवक तथा समाज को शिक्षा देने वाले गुरूजी थे।**

जिस सामाजिक क्रांति का उद्‌घोष आज हम करते हैं उस क्रांति के बीज ग्रामीण जनता में पचास साल पहले बोने वाला, उस नीति का समाज के सामने कीर्तन करने वाला, नये विचार, नई दृष्टि, समाज के अंत:करण तक पहुंचाने वाला, दीन-दुखी दलित सभी के साथ एक रूप होने वाला, ऐसा महान दृष्टा सतपुरूष महाराष्ट्र में हुआ। इसका अभिमान हर एक मराठी के मन में होना चाहिए।''

वसन्तराव नाईक : ''गाडगे बाबा महान देशभक्त, मानवता के पुजारी और समाज सेवक थे। बाबा फटे-पुराने कपड़े पहनते थे। हाथ में केवल मिट्टी का लोटा होने पर भी समाज को समृद्ध बनाने की उनकी अभिलाषा थी। खुद के अशिक्षित होने पर भी समाज को शिक्षित करने का उन्होंने प्रयत्न किया। मुझमें जो कमी है, वह जनता में नहीं रहे, ऐसा वह चाहते थे।

समाज को स्वच्छ और सम्पन्न बनाने के लिए गाडगे बाबा की मानवता की दी हुई शिक्षा पर हमें आचरण करना चाहिए। गाडगे बाबा महान देशभक्त, समाज सुधारक, मानवता के पुजारी थे''

भाई माधावराव बागल : ''मेरी दृष्टि से गाडगे महाराज का बड़प्पन और उनकी लोकप्रियता मूर्ति-पूजा है, यह इसी धर्म के हैं, इसलिए नहीं लगती।

जनसेवा के लिए उन्होंने स्वयं को समर्पित किया, गरीबों का इन्तजाम होना चाहिए, इसलिए उन्होंने बहुत सारी संस्थाओं का निर्माण किया। निःस्वार्थ भाव से पैसे को न छूते हुए, पैसे का उपयोग किया। इसलिए वह लोकप्रिय हैं। मैं खुद भी उसी दृष्टि से उन्हें देखकर प्रणाम करता हूँ।

वे जनता के लिए दिन-रात कार्यरत रहे, खुद फटे पुराने कपड़े पहनकर दूसरों के कपड़ों की चिन्ता करते रहे। खुद सभी ओर घूमकर लोगों को आश्रय देते रहे। खुद बासी रोटी खाकर औरों के पेट की चिंता करते रहे।

दरिद्र नारायण के लिए दिन-रात कष्ट सहने वाले, बेकारों के लिए उन्होंने तन मन खर्च किया। अंधों को, लूलों को अपने नजदीक लिया। इसलिए मैं मूर्तिपूजा, आध्यात्मवादी, देव धर्म के जंजाल में फंसा हुआ न होने पर भी गाडगे बाबा का आदर करता हूं। उन्होंने अपनी शक्ति, बुद्धि और सभी प्रयत्न जनसेवा के लिए किए है।

रोजाना माला जपकर मकान पर मकान बनाने वाले, हमेशा पंढरपुर की यात्रा करने वाले, साहूकारों का दफ्तर दिन-प्रतिदिन बढ़ाने वाले, खाली रोटी देकर, मजदूरों से काम लेकर खूब पैसा कमाने वाले, किसानों से काम लेकर उन्हें भूखे रखने वाले, शस्त्र दिखाकर उन पर राज करने वाले, बुद्धि की कसरत करके उन्हें अज्ञान में रखने वाले, यही जनता जनार्दन के असली शत्रु हैं।''

स्वामी आनंद : ''गाडगे महाराज आधुनिक काल के सेवक संत हैं। वह इतिहास का कीर्तन करते और दूसरों से करवाते। वह समाज के विशेषतः पंढरपुर, नासिक जैसे तीर्थ स्थानों पर यात्रा करने वाले लोगों के दुख को देखकर उनके कष्ट कम करने के लिए तरह-तरह की व्यवस्था के काम करने के लिए स्वयं अपने सहयोगियों को और अपने भक्तों को प्रवृत्त करते रहे। यही उनकी शिक्षा का विशेष गुण है। जनता पर उनका बहुत प्रभाव है।

वे निरंतर चलते रहते थे। उनके कीर्तन के लिए देहातों से कई हजार लोगों

का श्रेष्ठ समाज इकट्ठा होता था।

उनकी शिक्षा में ग्राम सफाई, पशुपालन, दुर्व्यसनों से दूर रहना, सर्व धर्म-समभाव ये बातें प्रधान रहती हैं। धर्म के नाम पर पशु-बलिदान, समाज शिक्षा तथा आचार-विचार के विरोध में आज कई वर्षों से उनका कार्य शुरू है।"

आचार्य भणसाली : "संत गाडगे बाबा को देखने का मौका मुझे मिला। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निमंत्रण पर गाडगे बाबा सेवाग्राम आश्रम में आये। उस समय मेरा मुकाम वहीं था। मैं बापू की कुटिया में रहता था। गाडगे बाबा के आने की खबर मिलते ही देहाती लोग शहद की मधुमक्खियों की तरह इकट्ठे हो गये। गाँधी जी इनकी लोकप्रियता देखकर अंचम्भित थे। बाबा का कीर्तन हुआ। कीर्तन के बाद कुटिया के सामने बैठकर बाबा ने भोजन खाया और उसी दिन चले गये। आज भी यह वाक्य याद आने पर कि मनुष्य सेवा ही ईश्वर-सेवा है, इस वाक्य को सार्थक करने वाले त्यागी, तपस्वी गाडगे बाबा की मूर्ति आंखों के सामने आ खड़ी होती है।"

संत तुकडोजी महाराज : "अपने लोगों पर उस निष्काम कर्मयोगी गाडगे बाबा के बहुत उपकार हैं। इस महापुरूष ने लाखों की सम्पति इकट्ठी की, परन्तु मिट्टी का लोटा नहीं छोड़ा। कौड़ी कान में बंधी हुई छोड़ी नहीं, फटे-पुराने वस्त्रों का त्याग किया नहीं, यह है सच्चा अनासक्त योग। ऐसा हाजिर जवाब और बेपरवाह संत मैंने पूरे जीवन में कहीं भी नहीं देखा, जिसके घर में खायेगा उसी के दोष, चौराहे पर रखने में कमी न करने वाला। दीन - दुखियों पर इस महापुरूष का आपार प्रेम था। उसी में उन्होंने भगवान का दर्शन किया। उन्हीं की सेवा में धन्यता मानी। गाडगे बाबा दुखियों की सेवा का कल्पतरू था। त्याग का यज्ञकुंड था। धैर्य का हिमालय था। अनेकों गुणों से वह बनी हुई साकार मूर्ति थी। महाराष्ट्र संतों की माता हैं। उसने अनेक बार भक्ति का आह्वान किया हैं। वह रण मैदान में बोलती हैं। महाराष्ट्र ने मनुष्य को जागृत किया। यहां अन्याय का प्रतिकार करने वाला संत-साधु पागल की तरह दिखाई देता है, फिर भी उसका अंत:करण दया

से, प्रेम से भरा हुआ है। संतों की भिन्न-भिन्न अवस्थाएं रहती हैं।''

स्वामी रामदासानन्द परांजपे : ''गाडगे बाबा और मेरी प्रथम भेंट क्षेत्र पंढरपुर में धोबी धर्मशाला में हुई। थोड़ी चर्चा भी हुई। मैं उस समय चौमासा के लिए पंढरपुर जा रहा था। उसके बाद सन् 1924 में हम कीर्तन-सुधा धारा के दो भाग छपवाने के लिए बम्बई गये थे। वहां के प्रसिद्ध निर्णय सागर प्रेस के मालिक पांडुरंग सेठ चौधरी के घर में मेरी उनसे भेंट हुई। नासिक धर्मशाला की लायब्रेरी हेतु कुछ ग्रंथ सहायता के लिए बाबा लाये थे। यह दूसरी भेंट थी और तीसरी भेंट सन् 1948 में पांडुरंग चौधारी सेठ की पत्नी लक्ष्मीबाई चौधारी के देवताली गांव के बंगले पर हुई। मैं भी उस समय वहीं था। लक्ष्मीबाई ने बाबा को बुला लिया। इस समय मेरी कुछ चर्चा हुई। जनता-जनार्दन की सेवा का व्यापक कार्य मुझे नजर आया। गाडगे बाबा की तपश्चर्या में शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से बहुत कुछ है। उनका कठिन वैराग्य, विनय, लोक संग्रह, सर्वभूत मात्र के लिए भगवद्भाव, कर्तव्य-कठोरता, निस्वार्थ बुद्धि, दीन-दुखियों पर अत्यधिक दया, ममता, परोपकार, अविश्रान्त मेहनत, शारीरिक तपश्चर्या, उदारता, साधुता, कुशाग्र-बुद्धि, कार्य-कुशलता आदि अनेकों गुणों का समन्वय देखने पर बाबा के प्रति स्नेह उमड़ता है। 'आता भी राहिलों उपकारा पुरता' अर्थात अभी मैं केवल उपकार के लिए हूं। तुकाराम महाराज के इन प्रवचनों की याद आती है। एक साधारण किसान और अशिक्षित व्यक्ति (अर्थात आज की दृष्टि से नर का नारायण) इस सुधारणा के काल में भी कैसे हो सकता है, यह बाबा को प्रत्यक्ष देखने पर ही दिखाई देता है। बाबा अष्ट-सिद्धियों और नौ निधियों के गुणों के भण्डार थे। उनमें से एक भी गुण यदि सामान्य आदमी ने अपने जीवन में अपनाया, तो भी उसका जन्म सार्थक होगा।''

('प्रयत्न' मासिक, वर्ष 1, अंक तीसरा, फरवरी 1956)

आचार्य अत्रे : ''मार्क्स मनुष्य था या बन्दर यह भी गाडगे बाबा को पता नहीं था। परन्तु 50 वर्ष तक अपने कीर्तन और जीवन से बाबा ने शुद्ध मार्क्सवाद की शिक्षा जनता को दी। गाडगे बाबा महाराष्ट्र के समाजवाद की पीठ थे। सभी

के प्रेम पर आधारित समतावाद के तत्वज्ञान का प्रचार कैसे करना चाहिए। इसका सात्विक आदर्श बाबा के कीर्तन में देखने के लिए मिलेगा।''

भूतपूर्व कर्मवीर भाऊराव पाटिल : (रयत शिक्षा संस्था के बड़े कार्यकर्ता और आज कोल्हापुर विश्वविद्यालय के कुलगुरू) और शिक्षाशास्त्री पी.जी. पाटिल के शब्दों में -

''सद्‌गुरू गाडगे महाराज पर अण्णा (भाऊराव पाटिल) की नित्तांत श्रद्धा थी। 'मेरी और भाऊराव पटेल की थोड़ी जल्दी भेंट हो जाती, तो मैं बहुत-सी शक्ति और पैसा, शिक्षा कार्य के लिए खर्च करता। ऐसा बाबा ने परली परिसर के दरेगांव में हुए एक कीर्तन में कहा था। आषाढ़ी और कार्तिकी यात्रा के समय अण्णा समय निकालकर पंढरपुर जाते थे। चंद्रभागा नदी के मैदान में हजारों वारकरी इकट्ठे होते थे। अण्णा ऐसे ही एक बार चंद्रभागा के मैदान में गये। बाबा की अण्णा से भेंट हुई। अण्णा बाबा के चरण छूने के लिए झुकते थे। सद्‌गुरू (गाडगे बाबा) और कर्मवीर (भाऊराव पाटिल) की मुलाकात का यह प्रसंग पुंडलिक मंदिर के पास हुआ। 25 हजार वारकरी साक्षी थे। बाबा और अण्णा की पंढरपुर में कालेज बनवाने की बहुत दिनों की इच्छा थी। बाबा 1956 में स्वर्ग सिधार गये और अण्णा 1959 में निजधाम गये।''

सत्यवान नामदेव सूर्यवंशी (नासिक से प्रकाशित 'आपण' साप्ताहिक संपादक, ईसाई धर्म के कार्यकर्ता, सत्य शोधक) : ''हजारों लोगों को केवल नाम के ईसाई आज मैं देखता हूं और जब मैं इन गाडगे बाबा को देखता हूं तब मुझे यह गाडगे बाबा ईसामसीह ही प्रतीत होते हैं। ईसामसीह वह मेरे अपने ही लगते हैं, इसका मुझे पूरा विश्वास है। केवल मैं इस धर्म का हूं, क्या यह कहलाना ही ध र्म है? मैं इस धर्म का हूं, ऐसा कहकर उस धर्म की दिशा लेना, मायने क्या धर्म का पालन करना? आचार नहीं, वैसा मन नहीं, तो वह दिशा निरर्थक-क्रिया धर्म, प्रार्थना, उपवास आदि फालतू अभिमान ही हैं। इसी अभिमान से ही घात होता है।''

व्ही शांतराम (सुप्रसिद्ध दिग्दर्शक और चित्रपट निर्माता) : ''कोल्हापुर में

रहते समय खुद का प्रचार करने वाले दो महात्माओं के विकृत नमूने देखे थे। उस दिन से संतों के बारे में मुझे अप्रियता हुई। अस्पृश्यता के विरोध में प्रचार करने वाले चित्रपट निकालने पर 'महात्मा गाडगे बाबा' एक दिन बम्बई में मेरे स्टूडियों में आये। मुझे पता चला। मैं हाल में नीचे गया। मुझे लगा ऊंचे आसन पर शिष्यों के बीच में बैठे होंगे। एक शिष्य ने बाबा का परिचय करा दिया। एक कोने में फटे-पुराने कपड़े ओढ़े हुआ व्यक्ति बैठा है। मैंने कहा, 'आप मुझसे मुलाकात के लिए आए, कोई खास बात है ? तब उन्होंने कहा, 'आपने अस्पृश्यता निवारण पर चित्रपट निकाला यह बहुत अच्छा काम किया। इसलिए मैं आपको देखने आया हूं।' आशीर्वाद देने का दंभ भी बाबा की वाणी में नहीं था। वह केवल ईश्वर में लीन होने वाले संत नहीं थे। देशहित, समाज-उद्धार की तीव्र अभिलाषा रखने वाले राष्ट्रीय संत थे।''

(ता. 30 अगस्त 1976 लोकशक्ति नवशक्ति, महाराष्ट्र टाइम्स)

पलटन रियासत के भूतपूर्व महाराजा, बम्बई राज्य के निर्माण मंत्री, **मालोजी राव राजे नाईक निवालकर** का गाडगे बाबा में बड़ा स्नेह था। वे गाडगे महाराज संस्था में ट्रस्टी थे। उन्हीं के शब्दों में-

''गाडगे बाबा जैसे बड़े संत महाराष्ट्र में लोक-जागृति का कार्य करते रहे, इसलिए महाराष्ट्र में चैतन्य दिखाई देता है। लोगों की सांस्कृतिक और मानसिक योग्यता बढ़ाकर लोक-कल्याण का सच्चा मार्ग उन्होंने दिखाया, इसमें शंका नहीं। उनका अधिकार बढ़ा, इसलिए लोग उनका उपदेश ग्रहण करते है।''

गणपतराव तपासे (उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा के पूर्व राज्यपाल) : ''गाडगे बाबा ने जीवन भर निर्लोभता से जनता की सेवा की। गरीबों से उन्हें बहुत प्रेम था। उन्होंने बहुमूल्य कार्य किया है।

गाडगे महाराज एक ऐसे निःस्वार्थ और महान संत थे जिन्होंने सदा सत्य के मार्ग को अपनाया और अपने हजारों भक्तों को इस मार्ग पर चलने की

प्रेरणा दी। अपने सुदीर्घ सेवाकाल में उन्होंने धर्मशालाओं का निर्माण ऐसे तीर्थयात्रियों की सुविधाओं के लिए किया जो कि प्राय: पुजारियों तथा अन्य शोषकों के शोषण से मुक्त नहीं हो पाते थे। उनकी प्रेरणा से पंढरपुर, नासिक, पूना तथा अन्य पुनीत स्थानों पर धर्मशालाएं निर्मित हुई। उन्होने दरिद्र व पीड़ितों के लिए अन्नदान तथा वस्त्रदान की व्यवस्था की। उनके जीवन काल में अहमदनगर जिले के राहुरा नामक स्थान पर आश्रम-स्कूल की स्थापना हुई। इस जगह पर भील जाति के बालक बालिकाओं को नि:शुल्क शिक्षा, आवास तथा भोजन की सुविधाएं भी दी जाती है।

संत गाडगे महाराज के व्यक्तिगत संपर्क तथा अभूतपूर्व कार्य से स्वयं को अभिभ्रत पाता हूं। मुझे गर्व है कि जब तक वे शरीर रूप में रहे, मुझे उनकी निकटता का सौभाग्य बराबर प्राप्त रहा। उनके न रहने पर भी उनके अंतिम काल में दिया गया संदेश मुझे भलि-भाँति ज्ञात है। गरीब और दलितों में आप शिक्षा का अधिकाधिक प्रबंध करें, मैंने उनके इस आदेश को शिरोधार्य करते हुए जीवन को इस ओर लगाने की चेष्टा की है, कहना न होगा कि हम सब को इस अमर संदेश को हर समय याद रखना है और इसके लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार कार्यरत होना है।"

जयन्तीलाल मान्यकर (जीव दया मंडल, बम्बई के सेक्रेटरी, गाडगे मिशन के चेयरमैन) : "गाडगे बाबा का साधुत्व केवल महाराष्ट्र तक सीमित नहीं था। उनकी भारत की बड़ी विभूतियों में गिनती होती है। दरिद्रनारायण की सेवा, गरीबो, अनाथों, अपंगों की आदिभौतिक-अध्यात्मिक और आदिदैविक सेवा करते रहे हैं।" ('जनता जनार्दन' मासिक वंदनांक)

डॉ. पंजाब राव : "गाडगे बाबा का आशीर्वाद मिलने के कारण ही मैं इतना शिक्षा का प्रसार कर सका।"

प.ह. पाटिल : "सन्त तुकाराम के बाद महाराष्ट्र में सर्वाधिक लोकप्रियता

गाडगे बाबा को मिली।''

यशवन्त चव्हाण : ''वे भारत के महान सन्तों और मनीषियों में से एक थे। हमारी सांस्कृतिक परंपरा का उचित निर्वाह गाडगे बाबा समान संतों द्वारा ही संभव हो सका है। किसी तरह का भेदभाव न रखते हुए सेवा कार्य करते हुये शिक्षा के विस्तार का महान कार्य संत गाडगे बाबा ने किया है। सैकड़ों वर्षों की विविध प्रकार की गुलामगीरी में रहकर भी भारत की सांस्कृतिक परंपराएं ज्यों की त्यों बनी रही हैं। गाडगे बाबा जैसे त्यागी पुरूषों से ही यह कार्य हो सका है।''

डॉ. वि. भी. कोलते (नागपुर विश्वविद्यालय के भू.पू. उपकुलपति) : ''वे एक आलौकिक विभूति थे।''

आचार्य केचे : ''वे स्वयं में एक संस्था तथा विद्यापीठ थे।''

वसन्त शेखाड़कर (गाडगे बाबा के अंग्रेजी जीवनी लेखक) : ''वे अपने आप में एक चमत्कार थे।''

के.सी. ठाकरे (पत्रकार) : ''महाराष्ट्र की जनता के मन में गाडगे बाबा के लिए जो आदर है वह समुद्र की तरह अथाह और अमिट है।

मार्क्स मनुष्य था या बंदर यह जिन्हें नहीं पता, उस संत गाडगे बाबा ने महाराष्ट्र में मार्क्सवाद प्रस्थापित किया।''

डॉ. पी.के. अत्रे (पत्रकार, साहित्यकार, फिल्म निर्माता) : ''गिरे हुए और अनाथ लोगों के लिए सन्त गाडगे भगवान के साक्षात अवतार थे।

मैंने जब संत गाडगे बाबा का कीर्तन सुना तब मुझे लगा कि मेरा 55 वर्ष का जीवन व्यर्थ गया। क्योंकि अभी तक मैंने बाबा का कीर्तन नहीं सुना था। उनका कीर्तन जीवन के मूल्यों की महान शिक्षा देता है। वे समाज जागृति का पवित्र कार्य कर रहे हैं। समाज की भलाई के लिए वे चन्दन के समान घिसकर अपनी वाणी एवं कृति से महान जनसेवा कर रहे हैं। उन्हें अपने शरीर का कोई ध्यान नहीं है।

वे हमें जाग्रत करना चाहते है, शिक्षा पर आधारित नया समाज देखना चाहते हैं। हमें ऐसे लोगों की खोज रहती है जो जादू के समान चमत्कार से हमें संतति दे सकें, हमें धन दिला सकें, हमारे दुख दूर कर सकें। किंतु गाडगे बाबा के पास इन बातों का कोई स्थान नहीं है। उनके पास किसी को देने के लिए कुछ भी नहीं है। उनके पास है वह मनोबल जो हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।''

गो.नि. दांडेकर (मराठी उपन्यासकार) : ''हाथ में जलती मशाल लिए बाबा जीवन भर दौड़ते रहे। कभी उसे बुझने नहीं दिया, न ही उस पर कभी कालिख जमने दिया।''

गाडगे बाबा की मृत्यु पर पूरे के पूरे मराठी समाचार पत्र उनके व्यक्तित्व एवं महान कार्यों से कई कई दिन तक भरे रहे। दैनिक मराठा के सम्पादक डॉ. पीं. के. अत्रे ने बाबा के कार्यों एवं व्यक्तित्वों पर लगातार 13 सम्पादकीय लिखे। सात रास्ता (मुम्बई) का नाम जेकब सर्किल से बदलकर गाडगे बाबा चौक रखने के अवसर पर भी दैनिक मराठा में एक लम्बा सम्पादकीय छपा था। मुम्बई महापौर की अध्यक्षता में 25.12.56 को एक सभा हुई इसमें बोलते हुए डॉ. पी. के. अत्रे ने संत गाडगे को संत तुकाराम का आधुनिक अवतार बताते हुए कहा था - ''अपने जीवन पर्यन्त मैंने उन जैसा सन्त नहीं देखा।''

अंग्रेजी फ्री प्रेस जर्नल (22.12.56) ने उनकी मृत्यु का समाचार प्रमुखता से छापा था। उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए दैनिक ने उन्हें महान क्रान्तिकारी कहते हुए लिखा था - ''उनका उद्देश्य ग्रामीण जीवन में क्रान्ति लाना था।'' दैनिक ने यह भी लिखा की गाडगे बाबा ने अपने बहुमुखी कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन काल में 75 संस्थाओं की स्थापना की थी।

बम्बे क्रोनिकल (22 दिसम्बर 56) ने उन्हें विख्यात संत लिखा था। अंग्रेजी दैनिक 'हितवादने' ने (22 दिसम्बर 56) उनकी मृत्यु की खबर तथा शवयात्रा की

सूचना (23 दिसम्बर 56) प्रमुखता से छापी। पत्र के अनुसार उनकी शवयात्रा में एक लाख से अधिक लोग शामिल हुए। दैनिक ने यह भी लिखा की अमरावती में इतनी बड़ी शवयात्रा पहले कभी नहीं निकली।

बढ़ते कदमः

1. महाराष्ट्र के कृतज्ञ लोगों ने संत गाडगे के नाम से 'संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय व श्री संत गाडगे बाबा अभियन्त्रण एवं प्रौद्योगिकी कालेज की स्थापना की है। इस विश्वविद्यालय के तहत 127 डिग्री कालेज सम्बद्ध है जिनमें 90,000 विद्यार्थी अध्ययन करते हैं यह विश्वविद्यालय कोमनवैल्थ, लंदन

विश्वविद्यालय का सहयोगी सदस्य है तथा एन. ए. ए. सी. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत से मान्यता प्राप्त है।

2. संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ ने 'संत गाडगे महाराज अध्यासन' शुरू

किया है। इस अध्यासन के माध्यम से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को गाडगे महाराज के जीवन, मान्यताओं, विचार तथा महान कार्यों का परिचय दिया जाता है जिससे नवजवानों के दिल में मानवीय गुणों का संचार हो सके। समता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व की अलख जगती रहे।

3. उत्तर प्रदेश सरकार ने कक्षा 8 की पाठ्य पुस्तक 'महान व्यक्तियों की जीवनी'

के अंतर्गत संत गाडगे का जीवन, संघर्ष, कार्यक्षेत्र, रूढ़ियों से निजाद दिलाने, शिक्षा के प्रसार आदि क्षेत्रों में संत गाडगे के योगदान पर प्रकाश डाला है।

4. भारत सरकार ने बाबा की यादगार हमेशा रखने के लिए 20 दिसम्बर, 1998 में 42 वी मृत्यु सालग्रह के उपलक्ष्य में एक टिकट जारी किया है।

5. भारत सरकार ने बाबा के अनेक कार्यों

जैसे बेरोजगारों को रोजगार दो, बे सहारों को सहारा दो, अपंगो एवं रोगियों की चिकित्सा कराओं, सभी को शिक्षा दो आदि को मनरेगा, बृद्धा पेन्शन, स्वर्ण जयन्ती स्वयं रोजगार योजना, सरकारी अस्पताल, अनिवार्य शिक्षा आदि के माध्यम से अनजाने में ही अपना लिया है। क्योंकि उनके कार्य बहुउपयोगी थे, समाज के सभी वर्गों के हित के लिए थे। परन्तु उपरोक्त कार्यों को अच्छी तरह से कार्यान्वयन की महती आवश्यकता है।

6. महाराष्ट्र शासन ने संत गाडगे बाबा का स्वच्छता अभियान अपना लिया है। स्वच्छता के मापदण्ड में आने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय ग्राम सभा को 5, 3, 2 लाख रुपयों से जिला स्तर पर पारितोषिक दिया जाता है। राज्य स्तर पर यह राशि क्रमशः 25, 15, 10 लाख रुपये है।
7. महाराष्ट्र सरकार ने 26 जनवरी 2005 गणतंत्र दिवस समारोह, राजपथ, नई दिल्ली में संत गाडगे के महान कार्यों की एक भव्य झांकी निकाली थी।
8. श्री श्री रविशंकर महाराज नें अपने प्रवचनो के दौरान दूरदर्शन पर सन् 2010 में कहा है कि 'यदि किसी को समाज सेवा करनी हो तो संत गाडगे महाराज

जैसी समाज सेवा करनी चाहिए'।

9. दशई चौधरी, भूतपूर्व मन्त्री स्वास्थ्य एवं इन्डस्ट्री, भारत सरकार, पटना शहर में संत गाडगे का जन्म समारोह 23 फरवरी 2011 में मना रहे थे वहां से एक ब्राह्मण जा रहे थे। संतजी के बारे में व्याख्यान सुनने के लिए सभा में बैठ गये। काफी वक्ताओं ने उनके जीवन संघर्ष, बहुउपयोगी कार्यों, आदि पर प्रकाश डाला। अन्त में उन ब्राह्मण महाश्य ने भी अपने उदगार संतजी के बारे में प्रकट करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने जन सभा में बताया कि मैं अपनी माँ के केंसर के इलाज के लिए मुम्बई शहर में गया था वहाँ माँ को अस्पताल में भर्ती करा दिया। मैं काफी थक गया था। शाम को रहने की व्यवस्था के लिए इधर-उधर, छोटे-बड़े होटलों के बहुत चक्कर काटे, परन्तु इतना अधिक किराया सुनकर, रात सड़क किनारे मजबूर होकर बितायी, बड़ा दुख हुआ, रात को नींद नहीं आयी। सुबह एक महाश्य ने बताया कि पास में संत गाडगे ने आप सभी के ठहरने के लिए एक धर्मशाला बनवायी है। धर्मशाला के रखरखाव के मात्र खर्चे पर, आपको रहने व खाने की व्यवस्था हो जायेगी। मैं वहां गया तो नाम मात्र के ही खर्चे पर एक महीने माँ के इलाज के लिए वहां रहा। रात को सकून में सोचने लगा कि यह महामानव कौन थे जिन्होंने इतनी अच्छी जनउपयोगी धर्मशाला का निर्माण कराया। पता करने पर पाया कि संत गाडगे शेणगांव में रजक समाज में पैदा हुए थे उन्होंने एक नहीं ऐसी 18 अन्य धर्मशालाओं का निर्माण महाराष्ट्र प्रदेश के अन्य शहरों में करवाया है अतः उनके सामाजिक योगदान के लिए हम नतमस्तक हुए तथा महसूस हुआ कि गरीब, रजक समाज के लोगों का भी समाज सेवा में महायोगदान है। यदि कोई भी इंसान अपनी सत्यनिष्ठा, लगन से किसी भी प्रकार का सामाजिक योगदान प्रदान करना चाहे तो कर सकता है। अंत में उन ब्राह्मण महोदय ने कहा कि आप जब भी ऐसा कार्यक्रम संत जी के बारे करें तो हम पूरा खर्चा उठाने को तैयार है जिससे ऐसी विचारधारा

व व्यवस्था 'लोगों द्वारा लोगों के लिए' की अलख जगती रहे। क्या आज कल के वैश्वीकरण, बाजारीकरण व निजीकरण के वातावरण में संत गाडगे महाराज के योगदान की प्रक्रिया व व्यवस्था की आम लोगों को आवश्यकता नहीं है? जिसे भुला दिया गया है जिस व्यवस्था में आमजनों को संकट के समय में राहत मिलती है। सिर्फ इस दिशा में निस्वार्थ भावना से संलग्न होने की आवश्यकता है। बहुत से लोग अपना योगदान देने को तैयार बैठे है। कोई वास्तविक, निस्वार्थ भाव से प्रयत्न करे तो सफल अवश्य मिलेगी।

भवतु सब्बमंगलम्

डा. जी. डी.दिवाकर
अध्यक्ष, संत गाडगे मिशन

lr xkMxs fe'ku (jft)

महामानव, परमपूज्य संत गाडगे महाराज के जीवन, दर्शन एवं कार्यों से प्रेरणा पाकर, संत जी के मिशन को जन-जन तक पहुँचाना अपना परम कर्तव्य मानकर हमारे साथियों द्वारा ''संत गाडगे मिशन'' की स्थापना मान्य. सी. पी. सिंह की अध्यक्षता में शालीमार बाग, दिल्ली में एक जनसभा में 3 सितम्बर 2000 को हुई, जिसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. संत गाडगे जी महाराज के विचारों को जन-जन तक पहुँचाकर सामाजिक बुराईयों को दूर करने का प्रयास करना एवं सामाजिक एकता के लिए भाई चारे को बढ़ावा देना।
2. समाज में व्याप्त बुराईयों एवं कुरीतियों के प्रभाव का अध्ययन करके उनके निराकरण का प्रयास करना।
3. पिछड़े क्षेत्रों में शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करके अशिक्षित लोगों के मध्य शिक्षा का विकास करना।
4. पुस्तकालयों एवं छात्रावासों की स्थापना करना।
5. गरीब वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का उचित मार्ग दर्शन करना एवं आर्थिक सहायता प्रदान करना।
6. आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए भारत सरकार/अन्य सरकार की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों से अवगत कराकर लाभान्वित करना।
7. आर्थिक उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक केन्द्रों का संचालन करना।
8. सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए अन्य कार्यक्रमों का संचालन करना।

संत गाडगे मिशन की कार्यकारिणी समिति, दिल्ली

श्री सी. पी. सिंह
चेयरमैन

श्री चिरंजीलाल
उपचेयरमैन

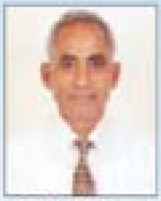
डॉ. जी. डी. दिवाकर
अध्यक्ष

डॉ. आर. सी. मधुरिया
महासचिव

श्री राजीव कुमार
कोषाध्यक्ष

श्री राकेश कुमार (गुड्डू)
उपाध्यक्ष

श्री नरेश कुमार कल्ल
उपाध्यक्ष

श्री एस. पी. सिंह
संयुक्तसचिव

श्री ब्रिजेश कनौजिया
सहसंयुक्तसचिव

श्री लेखराम दिवाकर
सांस्कृतिक कार्यक्रमसचिव

श्री चोखेलाल माथुर
सांस्कृतिक कार्यक्रमसचिव

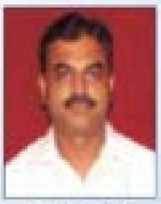
श्री सुरेश चौधरी
संगठन सचिव

श्री बाबूराम चौधरी
संगठन सचिव

डा. रामगोपाल
प्रचार सचिव

श्री इन्द्रपाल सिंह
सलाहकार

श्री पंकज कुमार प्रभात
विधि सलाहकार